बज्जिका भाषा और साहित्य

डॉ० श्रीसियाराम तिवारी
[हिन्दी-विभाग, कॉमर्स कॉलेज, पटना]

त्रयोदश वार्षिकोत्सव

अधिकचैत्र, शुक्ल चतुर्दशी, शुक्रवार, २०२१ विक्रमाब्द : १८८६ शकाब्द :
२७ मार्च, १९६४ खृष्टाब्द

बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद्
पटना

बज्जिसंघ : ऐतिहासिक परिचय

बज्जिका उत्तर बिहार के उस क्षेत्र की भाषा है, जिसमें प्राचीन काल में बज्जिसंघ अवस्थित था। इस बज्जिसंघ की स्थापना का काल अनिर्धारितप्राय है। इतना ही निश्चित रूप से ज्ञात है कि इसका अंतिम राजा सुमति अयोध्या के दशरथ और विदेह के सीरध्वज जनक का समकालीन था। ऐसा अनुमान किया गया है कि सुमति के बाद ही बज्जि-जनपद में उथल-पुथल आरम्भ हो गई और प्राय: ७२५ ई० पू० तक वहाँ आदर्श शक्तिशाली प्रजातंत्र स्थापित हो गया। प्रजातंत्र के इस आदि-दीप को राजतंत्र के अंधकार ने, भगवान् बुद्ध की मृत्यु के तीन वर्ष बाद, अर्थात् ४८४ ई० पू० तक, पूरा दबोच लिया। किंतु, मगध-साम्राज्य के दुर्बल पड़ते ही वैशाली का संघराज्य फिर उठ खड़ा हुआ और चौथी शती ईसवी के आरम्भ तक बज्जियों का एक दल लिच्छवि पुन: शक्तिशाली हो गया। लिच्छवि-राजकुमारी कुमारदेवी का विवाह गुप्तवंशी चंद्रगुप्त प्रथम (राज्यारोहण ३१६ ई०) से हुआ था, जिनसे उत्पन्न समुद्रगुप्त (शासनकाल ३३५—३७५ ई०) ने अपने को 'लिच्छवि-दौहित्र' कहने में गौरव अनुभव किया है।

इस बज्जिसंघ की सीमा के विषय में इतिहासकार एकमत नहीं हैं। हेमचंद्र रायचौधरी ने इसकी सीमा गंगा के उत्तर में नेपाल की पहाड़ियों तक और पश्चिम में गंडक से लेकर पूर्व में कोशी तथा महानंदा नदियों तक मानी है।[1] महापंडित राहुल सांकृत्यायन के अनुसार : बज्जिदेश में आजकल के चंपारन और मुजफ्फरपुर जिले, दरभंगा का अधिकांश तथा छपरा जिले के मिर्जापुर, परसा, सोनपुर के थाने एवं कुछ और भाग सम्मिलित थे।[2] वैशालिक इतिहास के प्रसिद्ध विशेषज्ञ डॉ० योगेन्द्र मिश्र का मत है कि बज्जिसंघ में 'चम्पारन जिला, मुजफ्फरपुर जिला, दरभंगा जिले का समस्तीपुर-सबडिवीजन, उसके पूर्व गंगा के किनारे-किनारे अपेक्षाकृत छोटा एवं आयाताकार एक भाग (यह पूर्व में कहाँतक गया था, कहना मुश्किल है) और चम्पारन-मुजफ्फरपुर से सटी नेपाल की तराई', ये क्षेत्र सम्मिलित थे।[3]

बज्जिका-क्षेत्र

बज्जिका-क्षेत्र का सही निर्धारण उत्तर बिहार के भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण से ही सम्भव हो सकेगा; किंतु अबतक जिन विद्वानों ने इसपर विचार किया है, वे विभिन्न निष्कर्ष पर पहुँचे हैं। डॉ० ग्रियर्सन ने बज्जिका-क्षेत्र को मैथिली के अंतर्गत समाविष्ट कर दिया है और इसे पश्चिमी मैथिली कहा है।[4] बज्जिका के स्वतंत्र अस्तित्व की ओर

---

१. पोलिटिकल हिस्ट्री ऑव ऐंशियेंट इंडिया, षष्ठ संस्करण, पृ० ११८।

२. पुरातत्त्व-निबंधावली, पृ० १२ की पाद-टिप्पणी।

३. कांँगरेस-अभिज्ञान-ग्रंथ, ६७ वाँ भारतीय राष्ट्रीय कांँगरेस, पटना, १९६२ ई०, पृ० ८०।

४. लिंग्विस्टिक सर्वे ऑव इंडिया, खंड ५, भाग २, पृ० १४।

विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करने का श्रेय महापंडित राहुल सांकृत्यायन को है। उन्होंने 'मातृभाषाओं की समस्या'[१] शीर्षक लेख में हिंदी के अंतर्गत जनपदीय भाषाओं की सूची दी है, जिसकी छब्बीसवीं संख्या में 'बज्जिका' उल्लिखित है। राहुलजी सारन जिले के मिर्जापुर, दिघवारा, परसा और सोनपुर, इन चार थानों की बोली के विषय में कहते हैं कि यह आसपास के किसी स्थान से न मिलकर गंडक-पार के मुजफ्फरपुर जिले के अपने पड़ोसी भाग से मिलती है।[२] इस तरह वे मुजफ्फरपुर जिले के अतिरिक्त सारन जिले के उक्त थानों को भी बजिका-क्षेत्र के अंतर्गत समाविष्ट करते हैं। अपने पक्ष की पुष्टि के लिए उन्होंने कहा है कि यह भाग ईसा से पाँच शती पूर्व गंडक पार के भाग से मिला ही हुआ था।

श्रीरामपदार्थ शर्मा ने बज्जिका-भाषा के सम्बन्ध में चिंतन-मनन का द्वार उद्घाटित किया है। उन्होंने नामकरण, भाषा का रूप, क्षेत्र आदि पर प्रथम बार मौलिकता-पूर्वक विवेचन कर अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार: हाजीपुर-सबडिवीजन का पश्चिमोत्तर भाग, मुजफ्फरपुर सदर सबडिवीजन का पूर्व-पश्चिमीय भाग, सीतामढ़ी-सबडिवीजन का पश्चिमोत्तर भाग एवं चम्पारन का पूर्वोत्तर भाग इस बोली का क्षेत्र है।[३] शर्माजी द्वारा निर्दिष्ट क्षेत्र आदर्श बज्जिका का क्षेत्र है। इसके पूर्व और पश्चिम, दोनों ओर बजिका फैली हुई है। आदर्श बज्जिका के क्षेत्र से हम ज्यों-ज्यों पूर्व की ओर बढ़ते हैं, उसपर मैथिली का प्रभाव पाने लगते हैं। इसी तरह, पश्चिम में बढ़ने पर भोजपुरी का प्रभाव देखा जाता है। यह कोई नई बात नहीं है। सीमावर्त्ती भाषाओं में ऐसा हुआ ही करता है। श्रीअजितनारायण सिंह 'तोमर' ने उज्जैन में सम्पन्न अखिलभारतीय लोक-संस्कृति-सम्मेलन के तृतीय अधिवेशन के अवसर पर पठित निबंध में बज्जिका-क्षेत्र के सम्बन्ध में अपना विचार दिया है। उनके अनुसार: मुजफ्फरपुर जिला, दरभंगा सदर का पंचमांश, समस्तीपुर का अर्द्धांश, मोतिहारी का अर्द्धांश तथा छपरा जिले के कुछ अंश में बज्जिकाभाषी निवास करते हैं। बज्जिका-क्षेत्र पर विचार करनेवालों में आधुनिकतम हैं श्रीराधावल्लभ शर्मा। इन्होंने लिखा है कि भाषा की दृष्टि से बज्जिका के अंतर्गत सम्पूर्ण मुजफ्फपुर, चम्पारन का पूर्वी क्षेत्र (घोड़ासहन, ढाका, पताही, मधुबन थाने और पिपरा तथा केसरिया थाने का आधे से अधिक क्षेत्र) तथा दरभंगा जिले के समस्तीपुर-सबडिवीजन को रखना विशेष उपयुक्त होगा।[४] राधावल्लभजी ने चम्पारन जिले के बज्जिकाभाषी क्षेत्र को स्पष्ट कर दिया है।

कुल मिलाकर कहा जा सकता है कि सम्पूर्ण मुजफ्फरपुर जिला, दरभंगा जिले का समस्तीपुर-सबडिवीजन, चम्पारन जिले के घोड़ासहन, ढाका, पताही, मधुबन, पिपरा और केसरिया थाने एवं सारन जिले के मिर्जापुर (मरहौरा), दिघवारा, परसा और सोन-पुर के थाने बज्जिका-क्षेत्र में अंतर्भुक्त हैं।

१-२. पुरातत्त्व-निबंधावली, पृ० २४१।

३. 'आर्यावर्त्त', ३१ अगस्त, १९५४ ई०।

४. काँगरेस-अभिज्ञान-ग्रंथ, ६७ वाँ भारतीय राष्ट्रीय काँगरेस, पटना, १९६२ ई०, पृ० १३३।

इस तरह, बज्जिका-क्षेत्र के उत्तर में नेपाल, दक्षिण में गंगा नदी, पश्चिम में सारन और चम्पारन जिले का भाग तथा पूर्व में दरभंगा जिला है। सीमावर्त्तिनी भाषाओं में उत्तर में नेपाली, दक्षिण में मगही, पश्चिम में भोजपुरी और पूर्व में मैथिली हैं। बज्जिका-भाषा का यह क्षेत्र ५२०५.६ वर्गमील में फैला हुआ है और इसके बोलनेवालों की संख्या ७० लाख १३ हजार ४६७ है।

बज्जिका के अंतर्वर्ग

सम्पूर्ण बज्जिका-क्षेत्र को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है। हाजीपुर और मुजफ्फरपुर के बीच की रेलवे लाइन मध्य अथवा आदर्श बज्जिका और पूर्वी बज्जिका-क्षेत्र के बीच सीमा का काम करती है। इसके पूर्व जंदाहा तक बज्जिका पर मैथिली का अस्वीकरणीय प्रभाव है। जंदाहा से पूर्व बढ़ने पर मैथिली का ईषत् प्रभाव लक्षित होने लगता है। इसी तरह, रेलवे लाइन के पश्चिम गंडक तक मुजफ्फरपुर जिले का भाग मध्य अथवा आदर्श बज्जिका का क्षेत्र है। सारन एवं चम्पारन जिले के कतिपय थानों की बज्जिका पश्चिमी बज्जिका है। पश्चिमी बज्जिका पर भोजपुरी का प्रभाव दृष्टिगत होता है।

नामकरण

इस भाषा के लिए राहुलजी द्वारा दिया हुआ 'बज्जिका' नाम सर्वाधिक प्रचलित है। किंतु, हमारे विचार से इसका तत्सम रूप 'वृजिका' होना चाहिए। कोई-कोई 'वृज्जिका' शब्द का भी प्रयोग करते हैं। श्रीरामपदार्थ शर्मा ने इसको 'वैशाली बोली' कहा है।[1]

बज्जिका का स्वतंत्र अस्तित्व

जिन कारणों से बज्जिका और अंगिका को मैथिली समझने का भ्रम होता रहा, उनमें सर्वप्रधान यह है कि इन भाषाओं के क्षेत्र को पृथक् करने के लिए पहाड़, बड़ी झील, बड़ी नदी आदि की तरह कोई प्राकृतिक वस्तु नहीं है। इस कारण, बज्जिका, अंगिका और मैथिलीभाषियों में परस्पर घनिष्ठ सम्पर्क रहा, जिससे तीनों की भाषा को पृथक्-पृथक् समझना कठिन हो गया। इतना होने पर भी इन सभी भाषाओं का स्वतंत्र अस्तित्व सुरक्षित है। यह इस बात का प्रमाण है कि इन भाषाओं की स्वतंत्र सत्ता अत्यंत दृढ है।

ग्रियर्सन का भ्रम

बज्जिका को मैथिली कहने के पक्ष में ग्रियर्सन का प्रमाण दिया जाता है। पर, विचारणीय है कि विदेशी होने के कारण ग्रियर्सन की दृष्टि अत्यंत स्थूल रही है। क्रियापदों में 'छ' देखकर वे इसे मैथिली समझ लेते थे और जब वे यह पाते थे कि इसके क्रियापदों का 'छ' युक्त रूप से भिन्न रूप भी है, तब वे इसे भोजपुरी मान लेते थे। भोजपुरी और मैथिली के अतिरिक्त भी कोई भाषा हो सकती है, इतनी दूर ग्रियर्सन का ध्यान गया ही नहीं। जिन भाषाओं और बोलियों का नाम पहले से ज्ञात था, उन्हीं भाषाओं के

१. 'आर्यावर्त्त', ३१ अगस्त, १९५४ ई०।

क्षेत्र को निर्धारित और उनको उदाहृत-मात्र करने का कार्य ग्रियर्सन ने किया। इस स्थिति में उनके लिए यह सम्भव नहीं था कि वे पूर्वोक्त कारणों से परस्पर संकुलित बज्जिका, मैथिली, अंगिका, भोजपुरी, इन भाषाओं के बीच विभाजक रेखा खींच सकते।

ग्रियर्सन के कथन से यह स्पष्ट है कि इस भाषा के लिए एक नाम देने में उन्हें बड़ी द्विधा का सामना करना पड़ा है। वह कभी तो इसे पश्चिमी मैथिली कहते हैं और कभी 'मैथिली-भोजपुरी'। मैथिली-भोजपुरी नाम उस भाषा को दिया जा सकता है, जो दोनों का सम्मिश्रण हो। ऐसा सम्मिश्रण दो भाषाओं की भौगोलिक सीमा पर हुआ करता है। ऐसी सम्मिश्रित भाषा दो-चार मील के क्षेत्र से अधिक कदापि नहीं हो सकती। पर, बज्जिका-क्षेत्र पाँच हजार वर्गमील से अधिक का है। इतने लम्बे क्षेत्र में भाषा की गति अनिश्चित रहे, यह भाषाविज्ञान-सम्मत बात नहीं है। अगर ग्रियर्सन ने जिस आधार पर इसे मैथिली-भोजपुरी कहा, उसे थोड़ी देर के लिए मान भी लिया जाय, तो इस प्रश्न का क्या उत्तर होगा कि तब उन्होंने इसे पश्चिमी मैथिली क्यों कहा? मैथिली और भोजपुरी का समान प्रभाव रखकर भी यदि यह बोली मैथिली है, तो फिर यह भोजपुरी का एक वर्ग कैसे नहीं है? तात्पर्य यह कि ग्रियर्सन के इस कथन से कि इसे मैथिली या भोजपुरी कहना कठिन है,[१] बज्जिका का स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध है।

ग्रियर्सन ने आगे चलकर अपनी द्विधा स्वयं स्पष्ट कर दी है। वे उत्तरी मुजफ्फरपुर की बोली के विषय में कहते हैं : "मैंने 'सेवेन ग्रामर्स ऑव दि बिहारी लैंग्वेजेज', भाग दो में इसे भोजपुरी का एक भेद बताया था; किंतु वर्त्तमान सर्वेक्षण में इसे मैथिली की विभाषा इसलिए बता रहा हूँ कि जिस क्षेत्र में यह बोली बोली जाती है, वह ऐतिहासिक दृष्टि से प्राचीन मिथिला-राज्य के अंतर्गत है।"[२] किंतु, विचारणीय है कि सोलह महा-जनपदों में जहाँ मिथिला का नाम भी नहीं है, वहाँ बज्जि का नाम आया है और पीछे यह दिखाया गया है कि सभी इतिहासकारों के अनुसार अन्य भागों के अतिरिक्त आज का सम्पूर्ण मुजफ्फरपुर जिला बज्जि-महाजनपद के अंतर्गत था। अतः, ग्रियर्सन जिस आधार पर इस भाषा को मैथिली कहते हैं, वह आधार ही सही नहीं है।

ग्रियर्सन द्वारा दिये गये उदाहरणों की परीक्षा

ग्रियर्सन ने इसके जितने उदाहरण दिये हैं, उनमें से उत्तरी मुजफ्फरपुर का दूसरा उदाहरण ही कुछ ठिकाने का है। वह उदाहरण इस प्रकार है—

---

१. The Maithili spoken in the Muzaffarpur District, and in a strip of country on the eastern side of Darbhanga is strongly infected by the neighbouring Bhojpuri spoken in various forms in the adjacent district of Saran and in the greater part of Champaran. So much is this the case, that, as spoken by some people, it is difficult to say where the dialect is Maithili or Bhojpuri. —Linguistic Survey of India : Grierson, Vol. V, Part II, P. 14.

२. वही, पृ० १०७।

"हम भैंस खोल क मुदै के दूरा पर से लेले जाइत रही । पैंड़ा में चौकीदार से भेंट हो गेल । उन हमरा के ध क थाना में ले गेल । हम्मर मन रहे कि भैंस के देवापुर, जहाँ हम्मर समधी रहै छथ, बेला आई । बेचे के मन न रहे । हम्मर खेत दू बेर ई भैंस चर गेल ह । हमरा रामकिसुन के अखज हवे । दू पाँजा धान काट लेले छथ । देवापुर कररिआ से छौ कोस है ।"

इस अवतरण से स्पष्ट है कि ग्रियर्सन विदेशी होने के कारण ध्वनि की सूक्ष्मता को लक्ष्य नहीं कर सके—'भैंस', 'मुदै', 'पैंड़ा', 'चौकीदार', और 'है' क्रमशः बज्जिका में 'भँइस', 'मुदई' 'पैंरा', 'चकुदार' और 'हए' उच्चरित होते हैं । फिर, 'रहै छथ', 'छथ' और 'हवे' क्रियापदों का आदर्श बज्जिका में क्रमशः 'रहइत हतन', 'हतन' और 'हए' रूप होगा ।

उपर्युक्त अवतरण का मैथिली-रूपांतर इस प्रकार है—

"हम महीस खोलि कऽ मुदईक दलान सँ लेने जाइत छलहुँ । बाट में चौकीदार सँ भेंट भऽ गेल । हमरा पकड़ि क थाना लऽगेल । हमर इच्छा छल जें महीस कें देवापुर, जतए हमर समधि रहैत छथि, राखि आबी । बेचबाक इच्छा नहि छल । हमर खेत ई महीस दू बेर चरि गेल अछि । रामकिसुन सँ हमरा दुस्मनी अछि । ओ दुइ पाँज धान काटि लेलन्हि अछि । देवापुर कररिया से छओ कोस अछि ।"

इसका भोजपुरी-रूपांतर इस प्रकार होगा—

"हम भँइस खोल के मुदई के दुआर से ले जात रहलीं (रहीं)। रस्ता में चउकीदार से भेंट हो गइल । ऊ हमरा के (हम के) ध क थाना में ले गइल । हमार मन रहल कि भँइस के देवापुर, जहाँ हमार समधी रहेलन, बइला आईं । बेचे के मन ना रहे । हमार खेत दू बेरी ई भँइस चर गइल । हमसे रामकिसुन से दुसमनागत बा । ऊ दू पाँजा धान काट लेहले बा । देवापुर कररिया से छौ कोस बा ।"

इस तुलना से स्पष्ट है कि बज्जिका का मैथिली और भोजपुरी से कितना दूर का सम्बन्ध है । ग्रियर्सन ने मैथिली और भोजपुरी के जो उदाहरण दिये हैं, उनका परीक्षण भी अपेक्षित है । उनके द्वारा प्रस्तुत मैथिली का उदाहरण यह है—

"॥ श्री चंपावती निकट दुरमिल झा लिखित पत्र ॥

स्वस्ति चिरंजीवि चंपावती कें आशीख, आगा लछुमनक जुबानी ओ चीठी सौं अहाँ सभक कुशल छेम बूझल, मन आनंद भेल । श्री लछिमी देबि कें नेना छोट छैन्हि, जेहि सौं ओकर परबरश होइक से अवश्य कर्त्तव्य थीक । हुनिका माता नहि; अहैं लोकनिक भरोस तेल कुँड़क निगाह रहैन्हि । एक बकस पठाओल अछि, से अहाँ क हेतु अहाँ राखब; बकस में छौ ६) टा रुपैया छैक, ओ मसाला सभ छैक; से बकस खोलि दुइटा रुपैआ ओ आधा २ सभ मसाला लछमी दाइ कें अपने चुप्पे देबैन्हि, दुइटा रुपैआ मसाला बकस अपने राखब, अहैं लै भेजाओल अछि ।"

उपर्युक्त मैथिली के पत्र का बज्जिका-रूपांतर इस प्रकार होगा—

"॥ सिरी चंपाबती के पास दुरमिल ओझा के लीखल चिट्ठी ॥

सोसती चिरंजीबी चंपाबती के असिरबाद, आगे लछुमन के जमानी आ चिट्ठी से तोहर सके कुसल छेम बुझाएल, मन अनंद भेल। सिरी लछमी देबी के लरिका छोट हैन, जेसे ओक्कर परबरिस होई से जरूर करतब हए। हुनकर माए न हथिन्, तोहरे सके भरोसे तेल कूँर के निगाह रहैन। एक बकसा पेठइली ह, से तोहरा ला, तूँ रखिह, बकसा में छौ गो रुपइआ हए, आ मसल्ला स हए; से बकसा खोल क दू गो रुपइआ आ अधा-अधा सब मसल्ला लछमी दाइ के तूँ चुप्पे दे दिअहुन, दू गो रुपइआ मसल्ला बकसा तूँ रखिह, तोहरे ला भेजइलिऔ ह।"

इस रूपांतर से बज्जिका के सम्बन्ध में कई बातें ज्ञात होती हैं—

(क) बज्जिका की प्रवृत्ति तद्भव शब्दों की ओर है, जबकि मैथिली की संस्कृत तत्सम की ओर।

(ख) बज्जिका ने अरबी-फारसी के शब्दों का निस्संकोच ग्रहण किया है, जबकि मैथिली को ऐसा करने में संकोच है।

(ग) बज्जिका में मध्यग वर्ण को द्वित्व कर देने की प्रवृत्ति है, जबकि मैथिली में इसका अभाव है। उदाहरण—ओकर (मै०)—ओक्कर (ब०); राखब (मै०)—रक्खब (ब०); मसाला (मै०)—मसल्ला (ब०)।

(घ) बज्जिका का समुच्चयबोधक अव्यय 'आ' है और मैथिली का 'ओ'।

(ङ) बज्जिका के कारकों की विभक्तियाँ मैथिली के कारकों की विभक्तियों से भिन्न हैं—

कारक	बज्जिका	मैथिली
कर्म	के	कें
करण	से	सौं
सम्प्रदान	ला	क हेतु, लै

(च) बज्जिका के क्रियापद तो मैथिली के क्रियापदों से सर्वथा भिन्न हैं। प्रस्तुत अवतरण में आये हुए दोनों के क्रियापदों की तुलनात्मक सूची इस प्रकार है—

बज्जिका	मैथिली
हैन	छैन्हि
हए	थीक
रहैन	रहैन्हि
ह	अछि
हए	छैक
दिअहुन	देबैन्हि
रखिह	राखब

(छ) बज्जिका में पूर्वकालिक क्रिया की रचना खड़ी बोली के समान कृदंत के योग से होती है, किंतु मैथिली में विना कृदंत के ही उसका विधान हो जाता है। यथा—

बज्जिका—से बकसा खोलक.........।
खड़ी बोली—वह बक्सा खोलकर.........।
मैथिली—से बकस खोलि.........।

(ज) प्रस्तुत अवतरण इस बात के प्रमाण हैं कि बज्जिका के सर्वनाम भी मैथिली से भिन्न हैं—

बज्जिका	मैथिली
तोहर सके	अहाँ सभक
ओक्कर	ओकर
हुनकर	हुनिका

इस विवेचन से वज्जिका को मैथिली समझने के ग्रियर्सन के भ्रम का निराकरण हो जाना चाहिए। ग्रियर्सन का भ्रम यह भी है कि बज्जिका भोजपुरी है। अतः, उनके द्वारा प्रस्तुत भोजपुरी के उदाहरण की परीक्षा भी अपेक्षित है। उनका दिया हुआ भोजपुरी का अवतरण यह है—

"एक अदमी का दू बेटा रहे। छोटका अपना बाप से कहलस की ए बाबू-जी धन में जे हमार हिस्सा होखे से बाँट दीं। तब ऊ दूनो के बाँट देलस। थोड़-ही दिन में छोटका बेटा सभ धन बटोर के दूर देस चल गइल। उहाँ सभ धन कुचाल में उड़ा देलस। जब सभ खरच क देलस तब ओह देस में बड़ा अकाल पड़ल। ओकरा बड़ा दुख होखे लागल। तब ऊ ओह देश का एक आदमी इहाँ जा के रहे लागल जे ओकरा के अपना खेत में सूअर चरावे खातिर भेज देलस... ।"

इस भोजपुरी अवतरण का बज्जिका-रूपांतर इस प्रकार होगा—

"एक अदमी के दु गो बेटा रहई (रहे)। छोटका अपना बाप से कहलक कि हो बाबू जी धन में जे हम्मर हिस्सा होए से बाँट द। तब ऊ दुन्नो के बाँट देलक। थोर ही दिन में छोटका बेटा सब धन बटोर क दूर देस चल गेल। हुँआँ सब धन कुचाल में उरा देलक। जब सब खरच क देलक तब ओह (ऊ) देस में बरा अकाल परल। ओकरा बरा दुख होए लागल। तब ऊ ओह (ऊ) देस के एक आदमी किंहाँ जाक रहे लागल जे ओकरा के अपना खेत में सुग्गर चराबे ला भेज देलक...।"

भोजपुरी के अवतरण से इस बज्जिका-रूपांतर की तुलना करने पर कई तथ्य स्पष्ट होते हैं, जिनसे दोनों भाषाओं की निम्नांकित भिन्नता सिद्ध होती है।

(क) बज्जिका और भोजपुरी के कारकों की विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न हैं—

कारक	बज्जिका	भोजपुरी
सम्बन्ध	के	का
सम्प्रदान	ला	खातिर
सम्बोधन	हो	ए

(ख) बज्जिका और भोजपुरी के क्रियापद भिन्न-भिन्न हैं—

बज्जिका	भोजपुरी
रहई (रहे)	रहें
कहलक	कहलस
होए	होखे
द	दीं
गेल	गइल

(ग) दोनों की सर्वनाम-रचना भी भिन्न-भिन्न प्रकार से होती है : हम्मर (ब०)—हमार (भो०) ।

(घ) बज्जिका की मध्यग वर्णों को द्वित्व करने की प्रवृत्ति भोजपुरी में नहीं है : दुन्नों (ब०)—दूनो (भो०) ।

(ङ) बज्जिका में 'ड़' व्यंजन नहीं है, जबकि भोजपुरी में यह है ।

(च) बज्जिका में पूर्वकालिक क्रिया की रचना के लिए 'क' कृदंत लगता है और भोजपुरी में 'के' ।

(छ) बज्जिका और भोजपुरी के विशेषणों में भी अंतर है : सब (ब०)—सभ (भो०) ।

यह विवेचन स्पष्ट करता है कि जैसे बज्जिका को मैथिली समझना एक भ्रांति थी, वैसे ही इसे भोजपुरी समझना भी । वस्तुतः, बज्जिका और भोजपुरी सर्वथा दो भिन्न भाषाएँ हैं ।

बहिस्साक्ष्य

यद्यपि भाषा के संदर्भ में किसी स्थापना अथवा खंडन के लिए अंतस्साक्ष्य ही सबल प्रमाण होता है, तथापि बहिस्साक्ष्य सर्वथा उपेक्षणीय नहीं है; क्योंकि दो भाषाओं के पार्थक्य के बहुत-कुछ बाह्य कारण भी होते हैं । बज्जिका के स्वतंत्र अस्तित्व को सिद्ध करने के लिए बहिस्साक्ष्य भी कम नहीं हैं । सर्वप्रथम तो यह है कि जो तत्त्व जन-समुदाय एवं भू-भाग को एकता के सूत्र में ग्रथित रखते हैं, उनमें भाषा सर्वप्रधान है । वैशाली-क्षेत्र तथा मिथिला-क्षेत्र के बीच कोई प्राकृतिक रुकावट नहीं होने के कारण दोनों के अधिवासियों में आवागमन सदा से बना रहा है, तथापि दोनों की राज्य-व्यवस्था, रीति-नीति, इच्छा-आकांक्षा, स्वभाव, प्रवृत्ति आदि में पर्याप्त विषमता रही है । अगर भाषा की एकता होती, तो ये सारे विभेद नहीं रहते ।

'अंगुत्तरनिकाय' नामक बौद्धग्रन्थ और 'भगवतीसूत्र' नामक जैनग्रंथ में सोलह महाजनपदों में बज्जिसंघ का उल्लेख तो मिलता है, किंतु विदेह (मिथिला) का नहीं । इससे इतिहासकारों ने अनुमान किया है कि उस समय मिथिला में दुर्बल राजतंत्र रहा होगा । बज्जिसंघ जैसे शक्तिशाली जनतंत्र को अपनी भाषा न हो, ऐसा सम्भव नहीं प्रतीत होता । सुदूर प्राचीन काल से बज्जिसंघ की अपनी पृथक् भाषा रही है । लिखित

साहित्य के अभाव के कारण इस भाषा का अस्तित्व धूमिल पड़ गया है। किंतु, लिखित साहित्य का अभाव स्वयं में इसके स्वतंत्र अस्तित्व का प्रमाण है। अगर बज्जिका मैथिली के अंतर्गत होती, तो इसमें भी मैथिली के समान साहित्यिक परम्परा होती। मैथिली की एक शाखा में साहित्य-रचना होती और दूसरे में नहीं, ऐसा सम्भव न था। अनुकरण में भी बज्जिका में साहित्य-रचना होती। परंतु, बज्जिका में मैथिली के अनुकरण का प्रश्न इसलिए नहीं उठा कि मैथिली एक भिन्न जनपद की बोली थी।

यद्यपि मैथिली कैथी-लिपि में भी लिखी जाती रही है, तथापि उसकी एक अपनी भी लिपि है—मिथिलाक्षर या तिरहुता। अगर बज्जिका का सम्बन्ध मैथिली से होता, तो बज्जिका-क्षेत्र के लोग मिथिलाक्षर का व्यवहार अवश्य करते। किंतु, सच तो यह है कि बज्जिकाभाषियों ने व्रजी, अवधी, खड़ीबोली सबको कैथी-लिपि में तो लिखा, पर इनमें किसी को भी मिथिलाक्षर में नहीं लिखा। इससे स्पष्ट है कि बज्जिकाभाषी मिथिलाक्षर को सदैव एक भिन्न बोली की लिपि समझते रहे हैं।

अंतस्साक्ष्य

ग्रियर्सन द्वारा दिये गये पश्चिमी मैथिली एवं भोजपुरी के उदाहरणों की परीक्षा करते समय बज्जिका की कतिपय वैयाकरण एवं भाषावैज्ञानिक विशेषताओं की ओर संकेत किया गया है, जो इसके स्वतंत्र अस्तित्व के अंतस्साक्ष्य हैं। ऐसे अंतस्साक्ष्यों पर यहाँ पुनः विस्तार से विचार किया जायगा।

भारतीय आर्यभाषा के विकास-क्रम में प्रायः ईसा की दसवीं शती से चौदहवीं शती तक का काल संक्रान्ति-काल कहा जाता है। यह वह काल है, जब अपभ्रंश-भाषाएँ साहित्य से अपदस्थ नहीं हुई थीं, किंतु लोकभाषाएँ प्रादुर्भूत हो चुकी थीं। किसी भी युग की परिनिष्ठित साहित्यिक भाषा में रचयिता के दैनिक व्यवहार की बोली किसी-न-किसी प्रकार आ ही जाती है। ऐसा ही उस युग में भी हुआ। अपभ्रंश के रचनाकारों ने अपनी-अपनी अपभ्रंश में अपनी-अपनी जनबोली का भी मिश्रण किया है, इसीलिए 'प्राकृतपैंगलम्' में खड़ी बोली, पंजाबी, व्रजी, अवधी, भोजपुरी, मैथिली आदि के समान बज्जिका के भी बीज मिलते हैं। 'प्राकृतपैंगलम्' के 'उबरल'[१] (उबरा हुआ, बचा हुआ), 'अंत ठिया'[२] (अंत स्थान में) आदि बज्जिका के अपने प्रयोग हैं। इस तरह, बज्जिका भोजपुरी और मैथिली से इतर तो है ही, समवयस्का भी है।

भोजपुरी से भिन्नता

(१) भोजपुरी में ड़ और ण व्यंजन-ध्वनियाँ तथा अर्द्धस्वर य और व हैं, किंतु बज्जिका में ये नहीं हैं।

(२) बज्जिका और भोजपुरी दोनों में संज्ञा के रूप पृथक्-पृथक् हैं। भोजपुरी में संज्ञा के लघु, गुरु और अनावश्यक तीन रूप होते हैं तथा लघु रूप भी सबल और

---

१. छंद-संख्या ३९।

२. छंद-संख्या १७०।

निर्बल होता है ।[1] बज्जिका में इससे सर्वथा भिन्न स्थिति है। व्याकरण के प्रसंग में संज्ञा पर विचार करते हुए इसका विस्तृत विवेचन किया गया है।

(३) भोजपुरी में संज्ञापदों का लिंगज्ञान कभी-कभी क्रियाओं द्वारा भी निर्धारित होता है। यथा : घर जरि गइल (घर जल गया), किन्तु पोथी जरि गइलि (पोथी जल गई)।[2] बज्जिका में ऐसा कभी नहीं होता।

(४) भोजपुरी में -अन,-अनि, -अन्ह,-अन्हि, -न्ह, -न्हि, -न, -नि प्रत्ययों की सहायता से बहुवचन बनते हैं;[3] किंतु बज्जिका में प्रत्ययों के योग से नहीं, बल्कि समूहवाची शब्द स (< सब) अथवा 'लोग' के योग से बहुवचन बनते हैं।

(५) भोजपुरी में यदा-कदा समूहवाची शब्दों के सहारे बहुवचन बनते भी हैं, तो बज्जिका से दो बातों का अंतर रहता है। बज्जिका के स के स्थान पर भोजपुरी में 'सभ' है और जहाँ बज्जिका संज्ञा और सर्वनाम सभी में एक ही समूहवाचक शब्द लगाती है, वहाँ भोजपुरी सर्वनामों में 'सभ' (रउँआँ सभ) और संज्ञापदों में 'लोग' (ऑमला लोग) लगाती है।

(६) भोजपुरी के कतिपय संज्ञापदों में कर्त्ताकारक में -इ प्रत्यय लगता है। यथा : देहि (देह), बाँहि (बाँह) आदि।[4] बज्जिका में कर्त्ताकारक का यह प्रत्यय नहीं होता।

(७) भोजपुरी और बज्जिका की क्रियाओं के रूप सर्वथा भिन्न प्रकार से चलते हैं। व्याकरण के प्रसंग में इसका सोदाहरण विवेचन किया गया है।

(८) भोजपुरी और बज्जिका में सहायक क्रियाएँ भिन्न-भिन्न हैं—

		भोजपुरी	बज्जिका
उ० पु०	१.	बाटीं, बाड़ी, बानी	हती, हतिअई
	२.	दईं, हवीं	
म० पु०	१.	बाटु, बाड़ु, बाटे, बाड़े	हते, हतही, हतहू, हतिअई
	२.	हवु, हवे	
अ० पु०	१.	बाड़े, बाड़ें, बाटे, बा, बाय, बाटै, बटुए	हई, हए, हथिन, हथ
	२.	हवे, ह	

बज्जिका और भोजपुरी का यह ध्वनिगत, रूपगत और व्याकरणगत अंतर दोनों भाषाओं का पार्थक्य सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है। इसके अतिरिक्त अनेकानेक छोटे-छोटे व्याकरण-सम्बन्धी अंतर दोनों भाषाओं के बीच देखने को मिलते हैं।

१. भोजपुरी भाषा और साहित्य : डॉ० उदयनारायण तिवारी, प्र० सं०, पृ० १४८।
२. वही, पृ० १८५।
३. वही, पृ० १८७।
४. वही, पृ० १८६।

मैथिली से भिन्नता

(१) मैथिली में अंत्यस्वर के रूप में 'इ' का उच्चारण समाप्त हो गया है और क्षतिपूर्ति में पूर्ववर्ती स्वर का उच्चारण विलम्बित होता है। उदाहरण : रवि—रव, अछि—अछ आदि। बज्जिका में इससे भिन्न स्थिति है। यहाँ अंत्यस्वर के रूप में 'इ' का उच्चारण समाप्त न होकर दीर्घ होता है। उदाहरण : रवि—रबी, कवि—कवी आदि।

(२) आदर-अनादर के लिए मैथिली में कर्त्ता तथा कर्म, दोनों के अनुसार क्रिया-रूपों में परिवर्त्तन होता है।[1] किंतु, बज्जिका में क्रिया सदैव कर्त्ता के अनुसार होती है। कर्त्ता तथा कर्म के अनुसार वाक्य चार प्रकार के हो सकते हैं—

	बज्जिका	मैथिली
१. अनादरसूचक कर्त्ता, आदरसूचक कर्म	नोकर नोकर के देखलक।	दास दास कें देखलक।
२. अनादरसूचक कर्त्ता, आदरसूचक कर्म	नोकर रजा के देखलक।	दास राजा कें देखलथिन्हि।
३. आदरसूचक कर्त्ता, अनादरसूचक कर्म	रजा नोकर के देखलन।	राजा दास कें देखलथि।
४. आदरसूचक कर्त्ता, अनादरसूचक कर्म	रजा रजा के देखलन।	राजा राजा कें देखलथिन्हि।

(३) मैथिली में कर्त्ता के लिंगानुसार भी क्रिया परिवर्त्तित होती है, परन्तु बज्जिका में कभी ऐसा नहीं होता—

मैथिली	बज्जिका
तों (स्त्री) जाइत थिकीह।	तूँ (स्त्री) जाइत हते (हतही)।
तों (पुरुष) जाइत थिकाह।	तूँ (पुरुष) जाइत हते (हतही)।
ओ (स्त्री) जाइत थिकीह (थीकि)।	ऊ (स्त्री) जाइत हए (हई)।
ओ (पुरुष) जाइत थीक।	ऊ (पुरुष) जाइत हए (हई)।

(४) मैथिली में ड़, ण, य, श, ष ये ध्वनियाँ हैं, पर बज्जिका में नहीं हैं।

(५) मैथिली और बज्जिका की विभक्तियाँ भिन्न-भिन्न हैं। व्याकरण के प्रसंग में इनकी तुलनात्मक सूची दी गई है।

(६) मैथिली में कर्त्ता के आदर-अनादर के अनुसार भी विभक्तियाँ बदलती हैं। यथा : द्वितीया और चतुर्थी की विभक्ति अनादर में 'कें' और आदर में 'काँ' है। बज्जिका में विभक्तियाँ किसी हालत में नहीं बदलतीं।

(७) मैथिली और बज्जिका के क्रियापद एवं उनकी रूपावली सर्वथा भिन्न हैं। उदाहरणार्थ, सहायक क्रिया की तुलनात्मक रूपावली द्रष्टव्य है—

---

१. भोजपुरी भाषा और साहित्य : डॉ० उदयनारायण तिवारी, प्र० सं०, पृ० १८३।

	मैथिली	बज्जिका
उ० पु०	१. थिकहुँ, थिकिऐक, थिकिएन्हि, थिकिअह, थिकिओक	हती, हतिअई
	२. छी, छिऐ, छिऐन्हि, छिअहु, छहि (स्त्री)	
म० पु०	१. थिकाह, थिकहक, थिकहून्ह, थिकें, थिकहीक, थिकहुँ	हते, हतही, हतहू, हतिअई
	२. छह, छहुन्हि, छी, छिए, छिऐन्हि, छे, छैं, छहक् , छहिक्	
अ० पु०	१. थीक, थिकैक, थिकैन्हि, थिकहु, थिकाह, थिकथीन्ह, थिकथून्ह	हई, हए, हथिन् , हथ
	२. अछि, छै, छैन्ह, छथि, छथीन्हि, छिक् , छहू, छथून्हि	

मैथिली और बज्जिका के ये अंतर दोनों भाषाओं की प्रकृति और प्रवृत्ति की भिन्नता के प्रमाण हैं। प्रकृति तथा प्रवृत्ति की यह भिन्नता दोनों भाषाओं की स्वतंत्र सत्ता सिद्ध करती है।

बज्जिका का व्याकरण

ध्वनियाँ : खड़ी बोली के सभी स्वर मूल रूप में बज्जिका में हैं, किन्तु उनके उच्चारण में पर्याप्त परिवर्त्तन है। उन परिवर्तित ध्वनियों का विवरण इस प्रकार है :

अ—शब्द के आरम्भ में आनेवाले 'अ' का उच्चारण विलम्बित होता है। 'स̲रक', 'क̲रज', 'फ̲रक' आदि का स, क और फ क्रमशः सड़क, कर्ज और फर्क के स, क और फ के उच्चारण से कालगत भिन्नता रखता है।

इस ध्वनि को प्रकट करने के लिए कुछ लोग संस्कृत के ऽ चिह्न का प्रयोग करते हैं और जिस वर्ण का विलम्बित उच्चारण होता है, उसके बाद यह चिह्न बैठाते हैं। किंतु, यह विचारणीय है। संस्कृत-भाषा में प्रयुक्त ऽ चिह्न अर्द्ध अ के लिए प्रयुक्त होता है। यथा : हरेऽव (हरे + अव)। परंतु, स̲रक के उच्चारण में स के बाद अर्द्ध अ नहीं है, बल्कि स का अ ही विलम्बित हो गया है। अतएव, विलम्बित उच्चारणवाले वर्ण के आगे ऽ चिह्न देकर इस ध्वनि को प्रकट नहीं किया जा सकता। डॉ० उदयनारायण तिवारी ने ऐसे वर्णों के ऊपर ऽ चिह्न को बैठाकर भोजपुरी भाषा की इस प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त किया है और इसका 'विलम्बित दीर्घ' नामकरण किया है। परन्तु, इस चिह्न को वर्णों के ऊपर लगाना सुविधाजनक नहीं है। यही सोचकर यहाँ वर्णों के नीचे एक पड़ी रेखा देकर इस ध्वनि को व्यक्त किया गया है।

यथास्थान मध्यग अ भी विलम्बित होता है। यथा : ओस̲रा।

शब्द के मध्य में यदि संयुक्ताक्षर रहता है, तो आदि अ विलम्बित नहीं होता। जैसे : डम्हक।

आ—अ के समान आदि आ भी विलम्बित होता है। यथा : कारज, काम, झाल आदि। किंतु, परवर्त्ती स्वर यदि इ रहता तो आदि आ विलम्बित नहीं होता। जैसे : गाफिल, गाभिन आदि।

ऍ—अन्य बोलियों के समान बज्जिका में भी ए का ह्रस्व रूप (ऍ) पाया जाता है। उदाहरण : कहेँला, समेँअना, चँहेँटना आदि।

ऐ—बज्जिका में अभीतक यह सुरक्षित तो है, किन्तु धीरे-धीरे अपना रूप परिवर्त्तित कर रहा है। उस रूप में यह अ + ए नहीं, बल्कि अ + इ हो गया है। जैसे : मैल > मइल, दैव > दइब, मैया > मइआ।

ऑ—ए के समान बज्जिका में ओ का भी ह्रस्व रूप (ऑ) पाया जाता है। यथा : केँऑँला, खसोँटना, खखोँरना आदि।

औ—ऐ के समान ही औ ने सुरक्षित रहकर भी अपना रूप परिवर्त्तित किया है। यह परिवर्त्तन दो रूपों में हुआ है। एक रूप में यह आ और उ का संयोग हो गया है; जैसे : और > आउर तथा दूसरे रूप में अ और उ का योग बन गया है; यथा : मौरी > मउरी, औंटना > अँउटना, हथौरी > हथउरी।

व्यंजन

ण, ड़, श और ष के अतिरिक्त शेष सभी व्यंजन सुरक्षित हैं। इन व्यंजनों का रूप क्रमशः न, र और स हो गया है। इसीलिए, बज्जिकाभाषी खड़ी बोली में बोलते समय भी ण, ड़, श और ष का उच्चारण नहीं कर पाते हैं।

अन्य रूपांतरित एवं नवविकसित व्यंजन-ध्वनियाँ इस प्रकार हैं—

ङ्—खड़ी बोली के समान बज्जिका में भी स्वरसहित यह व्यंजन नहीं पाया जाता है, परन्तु उसके विपरीत शब्द के अन्त में यह व्यंजन प्रायः ही आया करता है। शब्द के अंत्य अनुनासिक-युक्त व्यंजनों का लोप होकर ङ् हो गया है। उदाहरण : अङ < अङ्ग, भङ् < भङ्ग, सिङ् < सिंह आदि।

बज्जिका की नवविकसित ध्वनियों में एक है 'ङ्ह'। यह स्थूलतः अनुनासिक ङ् और स्वरयंत्रमुखी, सघोष, संघर्षी ध्वनि 'ह' के योग से बना प्रतीत होता है, किंतु वस्तुतः यह मूल व्यंजन-ध्वनि ही है। इसके उच्चारण में जीभ का पिछला भाग कोमल तालु को छूकर हट जाता है और फेफड़े से निकलनेवाली हवा घोष करती हुई मुख-विवर से बाहर निकल जाती है। यह महाप्राण, सघोष, तालव्य, स्पर्श-व्यंजन है। उदाहरण : जाङ्ह, निङ्हटना आदि।

अर्द्धस्वर

अर्द्धस्वर य और व का लोप हो गया है और इनका स्थान, कहीं स्वर, तो कहीं व्यंजन ने ले लिया है। इनके विकारों पर ध्वनि-परिवर्त्तन के प्रसंग में विस्तार से विचार किया जायगा।

कारक

कारक	बज्जिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
			विभक्तियाँ			
कर्त्ता	—	—	—	—	—	०, ने, से
कर्म	के	कें, कैं, काँ	के, कें	के	कें	को, से
करण	से	सँ, एँ, सौं	से, सें	से	सें	से
सम्प्रदान	ला, के लेल	कें	ला, ले लागि, खातिर	लागी	लें, के लेलूँ कें लेलीं	को, के लिए
अपादान	से, मेंसे	सँ	से, सें	से, सें, सतीं	सें	से
सम्बन्ध	कर, के	क	कें, के, कर्	कर, केर् र	के, के,	का, की, के
अधिकरण	में, पर, उप्पर	मे, पर	में, पर	में, पर	में, पर	में, पर
सम्बोधन	रे (अनादरवाची, पुरुषवाची) गे (अनादरवाची, स्त्रीवाची) हे (आदरवाची, स्त्रीवाची) हो (साधारण आदरवाची, पुरुषवाची) ओ (अधिक आदरवाची, पुरुषवाची)	रे, ओ, रौ,	—	गे, अहे, हे, अहो	रे, अगे, गे, हे, अजी, हेजी, जी	हे, हो, रे, अरे आदि

टिप्पणी : (क) बज्जिका के सम्बन्धकारक की विभक्तियों में 'कर' सर्वनाम के साथ और 'के' संज्ञा के साथ आता है। उदाहरण : हुनकर किताब ; राम के किताब।

(ख) अधिकरणकारक की विभक्ति का लोप होकर संज्ञा एकारांत हो जाती है। जैसे : हम घरे जाइत हती ; ऊ घरे हई; हम बिहने जाएब।

सर्वनाम के साथ यह विभक्ति प्रकट रहती है।

(ग) क्रियार्थक संज्ञा के साथ सम्प्रदानकारक की विभक्ति लुप्त हो जाती है और संज्ञाशब्द एकारांत हो जाता है। उदाहरण : हम खाए जाइत हती (मैं खाने के लिए जाता हूँ) ; ऊ पढ़े जाइत हए/हई (वह पढ़ने के लिए जाता है)।

संज्ञा

बज्जिका में संज्ञा के दो रूप मिलते हैं—सामान्य और विशिष्ट। भोजपुरी आदि अन्य बोलियों में भी संज्ञा के ये रूप उपलब्ध होते हैं। डॉ० उदयनारायण तिवारी ने भोजपुरी संज्ञा के इन रूपों के लिए लघु, गुरु और अनावश्यक, ये तीन नाम दिये हैं। बज्जिका में संज्ञा के इन रूपों का जैसा प्रयोग होता है, उसको देखते हुए लघु, गुरु और अनावश्यक नाम उपयुक्त नहीं हैं। संज्ञा का मूल रूप उसकी सामान्यता के बोध में प्रयुक्त होता है। घोरा जाइअ (घोड़ा जाता है) का 'घोरा' सामान्य घोड़े का वाचक है। किंतु, जब किसी विशिष्ट घोड़े को लक्ष्य कर उसका जाना सूचित किया जाय, तब कहा जायगा—घोरबा जाइअ। इसीलिए, बज्जिका के इन संज्ञा-रूपों के लिए सामान्य और विशिष्ट शब्द ही उचित ठहरते हैं। मगही में भी संज्ञा की यही स्थिति है।

संज्ञाशब्दों के अंत में 'बा' लगाकर या उसे आकारांत कर विशिष्ट रूप बनाते हैं। यथा : घर—घरबा; ढेला—ढेलबा ; चइला—चइलबा ; चमार—चमरबा, चमरा ; आम—अम्मा, अम्बा।

जिन संज्ञाशब्दों के अंत में पंचमाक्षर होता है, उनके विशिष्ट रूप में 'बा' या अंत्याक्षर का आकारांत रूप अथवा कोई दूसरा पंचमाक्षर का आकारांत रूप आता है। यथा : काम—कम्बा, कम्मा, कममा; कान—कनमा; राम—रम्मा, रममा, रम्बा; थान—थनमा; चलान—चलनमा।

जो संज्ञाशब्द ऊकारांत अथवा ईकारांत होते हैं, उनके अंत में 'आ' लगता है। यथा : घीऊ—घिउआ; पानी—पनिआ; धोबी—धोबिआ; परोसी—परोसिया।

उपर्युक्त विधान जातिवाचक संज्ञाओं के लिए है। व्यक्तिवाचक संज्ञाओं का ऐसा रूप अनादर और तुच्छता प्रदर्शित करने के लिए बनता है। यथा : राम—रम्मा, रममा, रम्बा ; सीता—सितबा ; उपेंदर—उपेंदरा; जोगिंदर—जोगिंदरा।

बज्जिका में पुंल्लिग तथा स्त्रीलिंग—दो ही लिंग होते हैं।

क्रियाओं से संज्ञापदों का लिंग नहीं जाना जाता। यथा : राम गेलई; सीता गेलई।

मगही में भी ऐसा ही होता है। भोजपुरी में कभी-कभी संज्ञापदों का लिंगज्ञान क्रियाओं द्वारा भी निर्धारित होता है। किंतु, विशेषण से संज्ञापदों का लिंग सूचित होता है; यथा : बरका लरिका; बरकी लरकी।

जीवित प्राणियों का लिंग उनकी प्रकृति के अनुसार निर्धारित होता है। निर्जीव पदार्थ सदैव पुंलिंग होते हैं। भोजपुरी में निर्जीव पदार्थ भी स्त्रीलिंग होते हैं।

स्त्री-प्रत्यय

आइन, इन, नी : गोआर—गोआरिन ; लोहार—लोहइन।
माहटर—माहटरनी ; गुरु—गुरुआइन।

वचन

संज्ञापदों का बहुवचन समूहवाची शब्द स॒ (<सब) जोड़कर बनता है। यथा : लरिका स॒ ; लोग स॒ ; आदमी स॒ ।

मगही में कई रूप प्रचलित हैं। साधारणतया वहाँ संज्ञा के अंत में 'बन', 'अन' प्रत्यय लगाते हैं। यथा : लरिका—लरिकुबन; आदमी—अदमीअन। इसके साथ-साथ समूहवाची शब्द लगाकर भी बहुवचन बनाया जाता है : जैसे लरिका सब। एक तीसरी स्थिति भी है। संज्ञापदों में बहुवचन-सूचक प्रत्यय भी लगता है और उसके साथ समूहवाची शब्द भी जोड़ा जाता है : जैसे लरिकुबन सब। भोजपुरी में प्रत्यय के सहारे और समूहवाची शब्द जोड़कर, दोनों प्रकार से बहुवचन बनते हैं।

सर्वनाम

पुरुषवाचक उत्तमपुरुष—हम

एकवचन

कारक	बज्जिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
कर्ता	हम	हम	हम, मयँ (में)	हम	हम, हम्में	मैं, मैंने
कर्म	हमरा, हमरा के	हमरा	मोरा, मोरा के, कें, हमरा, हमरा के	हमरा, हमरा के	हमरा	मुझे, मुझको
करण	हमरा से	हमरा सँ	हमरा से	हमरा से	हमरा सें	मुझसे
सम्प्रदान	हमरा, हमराला	हमरा	मोरा के, कें हमरा के, कें, ला	हमरा, हमरा लागी	हमरा लें, लेलूँ लेलों	मुझे, मुझको मेरे लिए
अपादान	हमरा से	हमरा सँ	मोरा, हमरा सें	हमरा से	हमरा सें	मुझसे
सम्बन्ध	हम्मर	हमर	मोर्, मोरे, मोरा, हमार्, हमरें, हमरा	हम्मर	हमर्	मेरा, मेरी, मेरे
अधिकरण	हमरा में, हमरा पर हमरा उप्पर	हमरा में	मोरा, हमरा में	हमरा में हमरा पर हमरा उप्पर	हमरा में, हमरा पर	मुझमें, मुझपर

बहुवचन

कर्ता	हम स॒	हम सब हमरा सबहि	हमनी का, हमरन्	हमनी, हमर॒नी	हमरा सिनी, हमरा रिनी, हमरा रो, हमरा सब	हम, हमने

कारक	बज्जिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
कर्म	हमरा सुके	हमरा सबकें, हमरा सबहि कें, हमरा लोकनि कें	हमनी, हमनी के हमरन्, हमरन् के	हमनी, हमरनी के	हमरा सिनी, हमरा रिनी, हमरा रो, हमरा सब } कें	हमें, हमको
करण	हमरा सुसे	हमरा सब सँ, हमरा लोकनि सँ	हमनी से	हमनी से	हमरा सिनी, हमरा रिनी, हमरा रो, हमरा सब } सें	हमसे
सम्प्रदान	हमरा सुके हमरा सुला	हमरा सबकें, हमरा सबहि कें, हमरा लोकनि कें	हमनी के, हमनी ला, हमरन् के, हमरन् ला	हमनी के हमरनीकें, हमनी लेल, हमरनी लेल	हमरा सिनी, हमरा रिनी, हमरा रो, हमरा सब } लें, लेलूँ, लेलीं	हमें, हमको, हमारे लिए
अपादान	हमरा सुसे	हमरा सब सँ, हमरा लोकनि सँ	हमनी सें, हमरन् सें	हमनी से	हमरा सिनी, हमरा रिनी, हमरा रो, हमरा सब } सें	हमसे
सम्बन्ध	हम्मर सुके	हमरा सबहिक, हमरा लोकनिक	हमनी, हमरन् } के, का	हमनी, हमरनी } के, केर्, केरा	हमरा सिनी, हमरा रिनी, हमरा रो, हमरा सब } र्, के, केर्	हमारा, हमारी, हमारे
अधिकरण	हम्मर सुमें, हमरा सुमें, हमरा सुपर, हमरा सुके उप्पर	हमरा सबमें, हमरा सबहिमें, हमरा लोकनि में	हमनी, हमरन् } में, पर	हमनी, हमरन् } में	हमरा सिर्नी, हमरा रिनी, महरा रो, हमरा सब } में, पर	हममें, हमपर

अन्य सर्वनाम एवं उसके रूप इस प्रकार हैं—

	बज्जिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
पुरुषवाचक मध्यमपुरुष	तूं, तोहर, तोहरा, अपने	तों, तोहरा, तोरा, तोर, अहाँ, अपने	तु, तुं, तू, तूं, तें, तो, तोरा, तोह, तोहरा, तोहार, तोर, रउआँ	तू, तों, तोरा, तोरी, तोर, तोहनी, तोहर्नी, तोहार, अपने	तों, तोंहें, तुहें, तुंह, आपनें	तू, तुम, तुझ, तुझे, तुम्हें, तेरा, तुम्हारा
निश्चयवाचक निकटताबोधक	ई, हिन, हिनका, हिनकर, एकरा, एक्कर	ई, एकरा, एकर, हिनका, हिनक, हिनकर	ई, हई, इन्हि, इहाँका, ए, एह, हे, इहाँ, एकर, हेकर, इन्हिकर, हिन्हिकर, एकरा, हेकरा, इन्हिकरा, हिन्हिकरा	ई, एह, एकर, एहकेर, इन्ह	ई, है, इनी, हिनी	यह, ये, इस, इसे, इन, इन्हें
निश्चयवाचक दूरताबोधक	ऊ, ओकरा, ओक्कर, हून, हुनका, हुनकर	ओ, ओकरा, ओकर, हुनक, हुनका, हुनकर	उ, हऊ, उन्हि, हुन्हि, उहाँका, ओह, हो, उन्हका	ऊ, ओह, ओहके, ओकर, उन्ह	ऊ, हौ, उनी, हुनी	वह, वे, उस, उसे, उन, उन्हें
अनिश्चयवाचक	केऊ, केकरा, किनका, केक्कर, किनकर	केओ, ककरो, ककरहुँ, कनिकहुँ, कनिको	केऊ, केहु, कौनो, कवनो,	केऊ, कोई, काहू, कोय, केकरो, कौनों	के किनी, किन	कोई, किसी, किन्हीं
प्रश्नवाचक	कोन, के, कोना, किनकर, किनका, कथी, की	के, की, कनिका, ककरा, कनिक, कनिकर, ककर	के, केवन, कौन, कवन्, किन्हीं, कौना	का, की, कउची, काहे, के, को, कौन, केह	के, कथी	कौन, किस, किसे किन, किन्हें
सम्बन्धवाचक	(१) जे, जोन, जोना, जिनका, जिन, जिनकर, जेकरा, जेक्कर, जेह (२) से, सेकरा, सेक्कर, तोन, तेकरा, तोना, तेक्कर, तिनका, तिनकर, तिन, तेह	(१) जे, जकरा, जकर, जनिका, जनिक, जनिकर (२) से, तकरा, तनिका, तनिक, तनिकर, तकर	(१) जे, जवन, जौन, जिन्हि, जौना, जेह, जेकर, जेहकर, जिन्हिकर, जेकरा, जेहकरा (२) से, ते, तवन्, तौन, तिन्हि, तौना, तवना, तेह, तिनि, तेकर, तेहकर, तिन्हिकर, सेकर, सेहकर	(१) जे, जौन, जेह, जेकर, जेहकर, जिन्ह (२) से, तौन, तेह, तेकर, तेहके, तिन्हकनी, तिन्ह	(१) जे, जिनी (२) से	(१) जो, जिस, जिसे, जिन, जिन्हें (२) सो, तिस, तिसे, तिन, तिन्हें

विशेषण

संज्ञापदों की भाँति विशेषण के भी दो रूप होते हैं—सामान्य और विशिष्ट । यहाँ
भी बज्जिका भोजपुरी से भिन्न हो जाती है। भोजपुरी में संज्ञा के समान विशेषण के भी
तीन रूप मिलते हैं, जिन्हें डॉ० उदयनारायण तिवारी ने 'लघु', 'गुरु' और 'अनावश्यक' नाम
दिया है। पर, जैसा कि संज्ञा पर विचार करते हुए दिखाया गया है, बज्जिका में विशेषण
के इन दो रूपों के लिए भी 'सामान्य' और 'विशिष्ट' नाम ही उपयुक्त होगा। किसी सामान्य
गुण से युक्त वस्तु के लिए विशेषण के सामान्य रूप का प्रयोग होता है; यथा 'लाल
घोरा' कहने से लाल रंगवाले तमाम घोड़ों का बोध होता है। किंतु, लाल रंगवाले किसी
विशेष घोड़े के विषय में कहना हो, तो कहा जायगा—'ललका घोरा जाइत हए'। इस
वाक्य में दो अभिप्राय हैं। प्रथम तो यह कि जो घोड़ा जा रहा है, वह लाल रंग का है
और द्वितीय यह कि वहाँ कई रंगों के घोड़े थे, जिनमें से लाल रंग का घोड़ा जा रहा है
और अन्य रंगों के घोड़े नहीं जा रहे हैं।

विशेषण का मूल रूप सामान्य रूप होता है और उसमें 'का' जोड़कर उसका
विशिष्ट रूप बनाते हैं। यथा : छोट—छोटका; बर—बरका; पीअर—पिअरका।

कहीं-कहीं 'क्का' भी लगाया जाता है। यथा : भारी—भरिअक्का; पहिला—
पहिलक्का।

जिस विशेषण-पद के अंत में पंचमाक्षर होता है, उसके विशिष्ट रूप में किसी अन्य
वर्ग का पंचमाक्षर आकारांत होकर आता है। जैसे : बौना—बौनमा।

किसी-किसी विशेषण-पद का अंत्याक्षर आकारांत होकर उसके विशिष्ट रूप को
सिद्ध करता है। जैसे : कनाह—कनहा।

यथास्थान विशेषण-पद में 'अहा' जोड़कर उसका विशिष्ट रूप बनाते हैं : पापी—
पपिअहा।

सामान्यतया अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण में भी 'का' अथवा 'क्का' जोड़ने
से उसका विशिष्ट रूप बनता है : जादे—जदका, बहूत—बहुतक्का। किंतु, कभी-कभी
उसके सामान्य रूप में भी 'का' लगा रहता है। यथा : थोड़ा (ख० बो०)—थोरका (ब०)।
इसमें 'बला' लगाकर इसका विशिष्ट रूप बनाते हैं : 'थोरका बला हम लेली'। इसका
अभिप्राय यह है कि अनेक ढेरों में थोड़ी वस्तुओं का जो ढेर था, वही मैंने लिया।

सार्वनामिक विशेषण का एक ही रूप, केवल सामान्य होता है।

संज्ञापदों के लिंग के अनुसार विशेषण के भी लिंग परिवर्त्तित होते हैं, किंतु
विशिष्ट रूप ही, सामान्य रूप कभी नहीं परिवर्त्तित होता। यथा, सामान्य रूप में 'निम्मन
लरिका' और 'निम्मन लरकी' कहा जायगा, लेकिन विशिष्ट रूप में 'निमनका लरिका' और
'निमनकी लरकी' कहना होगा। भोजपुरी में सामान्य (डॉ० उदयनारायण तिवारी के शब्दों
में 'लघु') रूप में यदा-कदा शिथिलता से लिंगानुसार परिवर्त्तन देखे जाते हैं।

गुणवाचक विशेषण—पुरना, नैआ, अगिला, निच्चा, उँच्चा (ऊँच), लम्मा,
टेंढ़, दुब्बर, पातर, हल्लुक, सुन्नर, कनाह, गोर, करिआ, निम्मन, खराब आदि।

तुलना के अर्थ में इन शब्दों को जोड़कर गुणवाचक विशेषण का प्रयोग होता है—

सन—ओकरा सन बहादुर आउर कोनो न हए।
(उसके समान बहादुर और कोई नहीं है)।
अइसन—चान अइसन सुन्नर ओक्कर मुँह हए।
(चाँद के समान सुंदर उसका मुँह है)।
जकित—कोइला जकित करिआ ई कपरा हई।
(कोयले के समान काला यह कपड़ा है)।
नहिता, नाहित—राम नाहित बिदेमान मीलै बुला न हए।
(राम के समान विद्वान् मिलनेवाला नहीं है)।
सिरीकिसुन जी नहिता राम रसलिल्ला न कएलन।
(श्रीकृष्ण के समान राम ने रासलीला नहीं की)।

निश्चित संख्यावाचक विशेषण :

गणनाबोधक—एक, दू, तीन, चार, पाँच, छौ, सात, आठ, नौ, दस आदि। गणनाबोधक विशेषणों के आगे 'ठो' या 'गो' लगाते हैं : चार ठो रुपइआ; दू गो पइसा।

क्रमबोधक—इसके दो रूप बज्जिका में पाये जाते हैं : सामान्य और विशिष्ट।

सामान्य	विशिष्ट
पहिला	पहिलक्का
दोसर	दोसरका
तेसर	तेसरका
चउठ	चउठा, चउठका

चार के बाद के क्रमबोधक विशेषणों का एक ही रूप होता है सामान्य। और, वे क्रमबोधक विशेषण गणनाबोधक विशेषणों के अंत में 'मा' जोड़ने से बनते हैं। जैसे : दसमा, इगरहमा, पनरहमा, सतरहमा आदि। इस सम्बन्ध में भोजपुरी खड़ी बोली के निकट है। खड़ी बोली का 'वाँ' यहाँ सुरक्षित है, परंतु बज्जिका ने 'वाँ' को 'मा' कर दिया है।

आवृत्तिबोधक—दोगुना (दुगुना), तेगुना, चरगूना, पँचगूना आदि। भोजपुरी में दुगुना, तिगुना आदि के भाव का बोध कराने के लिए तोर, तोरी, तोरीं; हाला, हाली, हालीं; बेर, बेरी, बेरीं का प्रयोग किया जाता है। इनमें से 'बेर' और 'बेरी' का प्रयोग बज्जिका में भी होता है। हम आइ चार बेर (बेरी) खइली (मैंने आज चार बार खाया)। इसके अतिरिक्त बज्जिका में 'हुरा' और 'दुफा' लगाकर भी आवृत्तिबोधक विशेषण बनाते हैं : एकहुरा, एक दुफा।

समुदायबोधक—एक्को (एक्का), दुन्नो (दुक्का), तीनो (तिक्का), चारो (चउका), पाँचो (पँचका) आदि।

प्रत्येकबोधक—खड़ी बोली में 'प्रत्येक' और 'हर' के योग से प्रत्येकवाचक विशेषण बनता है, किंतु बज्जिका में केवल 'हर' आता है। यथा : हर आदमी, हर गाए, हर गाछ आदि।

खड़ी बोली की तरह बज्जिका में भी गणनावाचक विशेषण की द्विरुक्ति से प्रत्येकबोधक विशेषण बनता है। यथा : दू-दू आदमी, चार-चार आम, छौ-छौ बकरी आदि।

अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण : बज्जिका में अनिश्चित संख्याचक विशेषण इस प्रकार बनते हैं—

(क) दो निकटवर्त्ती पूर्णांक अथवा अपूर्णांक को मिलाकर। यथा : दु-चार अदमी, दु-अढ़ाई रुपइआ, पाँच-छौ गो जन। ऐसा खड़ी बोली में भी होता है।

(ख) पूर्णांक संख्या में 'न' लगाकर भी अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण बनते हैं। यथा : लाखन अदमी हुँआँ जमा रहे (लाखों आदमी वहाँ जमा थे); बीसन बिदेआरथी तुरंत जूट गेलन (बीसों विद्यार्थी तुरत जुट गये)। खड़ी बोली में संख्या को बहुवचन बनाकर ऐसा किया जाता है। जैसे : लाखों व्यक्ति, बीसों छात्र आदि। बज्जिका में जो 'न' लगता है, उसे बहुवचनबोधक नहीं समझना चाहिए। भोजपुरी में 'अनि' और 'अन्हि' प्रत्यय लगाकर अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण बनते हैं। यथा : बीसनि, बीसन्हि।

(ग) थोरका, बहूत, मारे, सब, कुल्लम, कम, टाल्, ढेरेँक, फलना आदि बज्जिका के अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण हैं।

अनिश्चित परिमाणबोधक—थोरा, बहूत, तनी, जादे, ढेरेँक, टाल् मारेँ आदि।

निश्चित परिमाणबोधक—परिमाण के साथ निश्चित संख्यावाचक के प्रयोग से निश्चित परिमाणबोधक बनता है। खड़ी बोली एवं अन्य बोलियों में भी ऐसा ही होता है।

सार्वनामिक विशेषण—यह खड़ी बोली के समान ही होता है।

विशेषणों की रचना

संज्ञा से विशेषण—

(क) संज्ञा में निम्नांकित प्रत्यय लगाकर विशेषण बनाते हैं :

अना—सलना	अउआ—घुमउआ, कमउआ
अउती—सगुनउती	आ—अरिया, अउँठिआ
आनी—मरदानी, जनानी	ई—सोमारी
इअल—सानिअल	उआ—खरिदुआ, किनुआ
गर—नुनगर, दुधगर	दार—घेरदार

बारी—हफ्तबारी, महिनबारी   मान—धनमान, बिदमान
मंत—रुपमंत   हार—खनिहार, जनिहार
हेरा—लुटहेरा, भङ्हेरा   हेरी—गँजहेरी, भङ्हेरी

(ख) संज्ञा में निम्नांकित उपसर्ग लगाकर विशेषण बनाये जाते हैं—

अध—अधमूआ, अधपक्कू   अन—अनचल्लू
कम—कमअक्किल, कमकिमती   ना—नाउमीद, नाकामिल
नि—निकम्मा, निपनिआ   बे—बेपानी, बेहाँथ, बेसरम
ला—लाजबाब, लागरज

क्रिया से विशेषण—क्रिया से विशेषण 'ल' प्रत्यय लगाकर बनाते हैं : 'देना—देल; लेना—लेल।

क्रिया

क्रिया का मूल रूप धातु है। अन्य भारतीय आर्यभाषाओं एवं उनकी बोलियों के समान बज्जिका की धातुओं के भी दो वर्ग हैं—सिद्ध और साधित।

नामधातु—बज्जिका में नामधातु 'आना' जोड़कर बनाई जाती है : लात—लतिआना; बात—बतिआना, हूँरा—हुँरिआना। प्रत्यय-रहित नामधातुएँ भी बज्जिका में पाई जाती हैं। कुछ ऐसी नामधातुएँ ये हैं : अंकुर, अलग, दँत (दाँत), मूत (मूत्र), सूख (शुष्क) आदि।

खड़ी बोली एवं अन्य बोलियों के समान बज्जिका में भी क्रिया का अकर्मक और सकर्मक भेद वर्त्तमान है।

बज्जिका में क्रिया पर कर्त्ता के लिंग और वचन का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है, केवल कर्त्ता के आदर और अनादर का प्रभाव पड़ता है।

यथा : राम जाइअ / जाइत हए।
सीता जाइअ / जाइत हए।
एक बैल जाइअ / जाइत हए।
बहूत बैल जाइअ / जाइत हए।

किंतु, रजा जाइत हतन; और, नोकर जाइअ।

'आई' प्रत्यय लगाकर बज्जिका में क्रिया से संज्ञा बनाते हैं : तपाना—तपनाई; किनना—किननाई; खेलना—खेलनाई।

बज्जिका की सहायक क्रियाओं पर पीछे संक्षेप में विचार किया जा चुका है। यहाँ बिहार की अन्य बोलियों के साथ तुलनात्मक रूपावली प्रस्तुत की जा रही है—

वर्त्तमानकाल—मैं हूँ

	बज्जिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
उ० पु०	हती, हतिअई	(१) छी, छिऐ, छिऐन्हि, छिअहु, छहि	(१) बाटीं, बाड़ी, बानी	(१) ही, हीं	छी, छियै, छिहौं	हूँ, हैं
		(२) थिकहू, थिकिए थिकिऐन्हि, थिकिअहु	(२) हईं, हवीं	(२) हकी, हिकूँ, हिए		
म० पु०	हते, हतहो, हतहू, हतिअई	(१) छह, छहून्हि, छी, छिऐ, छिऐन्हि, छे, छैं, छहक्, छहिक्	(१) बाट्, बाड़्, बाटे, बाड़े	(१) हें, हहिन्, ह, हहुन्,	छ, छें, छियै	है, हो
		(२) थिकह, थिकहून्हि, थिकहू, थिकिए, थिकिएन्हि, थिकें, थिकैं, थिकहक्, थिकहीक, थिकीह, थिकीहि	(२) हवु, हवे	(२) हँ, हे, है, हहीं, हकी, हकिन्, हहू, हहो, हहूँ, हखुन्		

	बजिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
अ० पु०	हई, हए, हथिन्, हथ	(१) अछि, छै, छैन्ह, छथि, छथीन्हि, छिक्, छहु, छथून्हि	(१) बाड़े, बाड़ें, बाटे, बा, बाय, बाटै, बट्टुए	(१) है, हहिन्, हैं, हइन्	छै, छत, छथिन	है, हैं
		(२) थिक्, थिकै, थिकैन्हि, थिकह, थिकथीन्हि, थीक्, थिकहु, थीकि, थिकोह, थिकीहि	(२) हवे, ह	(२) ह, हे, हों, हस्		

भूतकाल—मैं था

	बज्जिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
उ० पु०	रही, रहिअई	छलहु, छलिए, छलिएन्हि	रहलीं	हलूँ, हलीं, हली, हलिए	छेलें, छेलियै,	था, थे
म० पु०	रहे, रही, र	छलह, छलहून्हि, छलहु, छलिए, छलिऐन्हि	रहलु, रहलो	हले, हलहिन्, हल् , हलहुन् , हलँ, हले, हला, हलहीं, हलह, हलहू, हलहो, हलहूँ	छेलें, छेलियै,	था, थे
अ० पु०	रहे, रहई, रहथ, र	छल् , छलै, छलैन्हि, छलह, छलथीन्हि	रहले, रहल्	हल् हलहिन्, हलन्, हलथिन् , हलै, हलहीं, हलखिन् , हलथी	छेलु, छेलहैन, छेलिथन छेलै,	था, थे

भविष्यत्काल—मैं हूँगा

	बज्जिका	मैथिली	भोजपुरी	मगही	अंगिका	खड़ी बोली
उ० पु०	होएब, होबई	होएब्, होब्	होइबि	होब् , होबई, होबउ	होबु	हूँगा
म० पु०	होएबे, होएबु, होऐब्	होएबह, होएब	होइबे, होइब, होइबि	होबँ, होबें, होबा, होबे, होबही, होबीं, होबी	होतै	होगा, होगे
अ० पु०	होएत, होतई, होएतन्	होएत्, होएताह	होई, होइहें, होइबि	होई, होत, होतई, होतउ, होती	होतै, होथैन, होतैन	होगा, होगी, होगे

अव्यय

सर्वनाम-जनित रीतिवाचक क्रियाविशेषण : अइसे (इस तरह), ओइसे (उस तरह), जइसे (जिस तरह), तइसे (तिस तरह), कइसे (किस तरह) ।

कालवाचक अव्यय :

क. संज्ञापदों से निर्मित—घरी (समय), समै (समय), टैम (टाइम, समय), बखत (समय), जल्दी, तुरंत, फुरती, हालसिना (शीघ्रतापूर्वक) ।

ख. सर्वनाम से निर्मित—ऐह बेर (इस समय), ओह बेर (उस समय), जेह बेर (जिस समय), तेह बेर (तिस समय), कोन बेर (किस समय) ।

ग. अव्यय-पदों से निर्मित—आगे (सामने), आज, काल्ह, बिहान, बिहने, तुरंते, रोज, नित् , बारम्बार, अब् , कब् , तब् , जब् ।

घ. दो अव्ययों के योग से निर्मित—जब्-जब् , तब-तब् , कभी-कभी, कखनिओ-कखनिओ ।

स्थानवाचक अव्यय :

सर्वनाम-जनित—१. हिँआँ, हूँआँ, जहाँ, तहाँ, कहाँ, कहँई, जहँई ।

२. एज्जुन (यहाँ, इस जगह), ओज्जुन (वहाँ, उस जगह), केज्जुन (कहाँ, किस जगह), जेज्जुन (जहाँ, जिस जगह) ।

३. एट्ठन, एट्टुन (यहाँ), ओट्ठन, ओट्ठुन (वहाँ), केट्ठन, केट्ठुन, (कहाँ), जेट्ठन, जेट्ठुन (जहाँ), तेट्ठन, तेट्ठुन (तहाँ) ।

अन्य—अंतह (अन्यत्र), लग (निकट), लगिच्चा (निकट), लगीच (निकट), भितरी (अंदर), बहरा, बाहर (बाहर), तर (नीचे), पर (ऊपर), उप्पर (ऊपर) ।

प्रकारवाचक अव्यय : एक बैग (एक-ब-एक), एक बारगी, अतिअंत, खाली (केवल) ।

संख्यावाचक अव्यय : असगर (अकेला), दोसर (दुकेला), एक बेर (एक बार) ।

परिमाणवाचक अव्यय : जादे (ज्यादा), ढेरेक (बहुत), टाल् (बहुत), कम्मी (कमी), बेसी (अधिक) ।

स्वीकार तथा निषेधवाचक : हँ, हूँ (हाँ), न (नहीं), मत (नहीं) ।

सम्बन्धवाचक अव्यय (वाक्य-संयोजक) :

क. समुच्चयबोधक—आ, आउर (और) ।

ख. प्रतिषेधक—बाकि (लेकिन), मगर ।

ग. विभाजक—

इआ (या)—राम इआ सेआम जाएत ।

कि—तूँ जएब् कि हम जाऊ ?

चाहे—ऊ आवे चाहे न, हम त जएबे करब ।

की—की मरद की मेहरारू !

त—ऊ न आएत त हमरा जाए के परत ।

टिप्पणी : कभी-कभी समुच्चयबोधक अव्यय का वाक्य में स्वतंत्र अस्तित्व नहीं रहता है और वह कर्त्ता के साथ लीन होकर उसमें विकार ला देता है : रामे जाएत (राम ही जायगा, दूसरे जानेवाले नहीं जायेंगे); रामो जाएत (अन्य लोग तो जायेंगे ही, राम भी जायगा)।

सम्बन्धवाचक अव्यय (आश्रितवाक्य-संयोजक) :

जे—ऊ हमरा कहलक जे हम जाएब (उसने मुझसे कहा कि मैं जाऊँगा)।

जेकि—ऊ कहलक जेकि न जाएब (उसने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा)।

जेहमें—ऊ जल्दी रुपइआ दे देलक जेहमें हम हूँआँ से चल जाई (उसने शीघ्र ही रुपये दे दिये, ताकि मैं वहाँ से चला जाऊँ)।

ज—ज हम ई काम करी त कहिहू (यदि मैं यह काम करूँ, तो कहिएगा)।

कहेँनाकि—हम ओकरा कन न गेली कहेँनाकि ऊ ठीक अदमी न हए (उसके यहाँ मैं नहीं गया; क्योंकि वह अच्छा आदमी नहीं है)।

बल—ऊ कहलक बल हम न जाएब (उसने कहा कि मैं नहीं जाऊँगा)।

मनोभाववाचक अव्यय :

क. सम्मतिज्ञापक—हूँ, हँ, अच्छे, अच्छा।

ख. अस्वीकृतिज्ञापक—उहुँ, न, नत।

ग. अनुमोदनज्ञापक—बाह-बाह, खूब हए, ठीक हए, चाबस, साबसे।

घ. घृणाव्यंजक—राम-राम, दुरहो, धिरकार।

ङ. भय, यंत्रणा, मनःकष्टव्यंजक—ओँह, बाप रे बाप, मरली रे बा।

च. सम्बोधनद्योतक—रे, गे, हे, हो, ए, ओ।

भाषावैज्ञानिक विश्लेषण

किसी भाषा के बाह्य स्वरूप का निर्माण ध्वनियों से और आंतरिक स्वरूप का निर्माण अर्थतत्त्व से होता है। प्रत्येक जीवित भाषा ध्वनि और अर्थ के सम्बन्ध में अपना नियम रखती है। अतः, एक भाषा जब दूसरी भाषा से शब्द ग्रहण करती है, तब उसे अपनी ध्वनि के नियमों के अनुसार ढाल लेती है। यही नहीं, निजी ध्वनियों में भी भाषाएँ परिवर्त्तन करती रहती हैं और यही बात अर्थ के सम्बन्ध में भी होती है। बज्जिका भाषा में भी ध्वनियों के अपने नियम हैं, जो इसकी सहोदरा भाषाओं—खड़ी बोली, भोजपुरी, मगही, अंगिका, मैथिली आदि—से भिन्न हैं। अतएव, बज्जिका के अंतर्बाह्य स्वरूप का परिचय प्राप्त करने के लिए ध्वनि तथा अर्थ के नियमों का ज्ञान आवश्यक है।

ध्वनि-विकार

स्वर-विकार :

१. ऋ के विकार

आदि ऋ > इ—कृष्ण > किसुन; > ई—ऋषि > रीसी।

टि०—कहीं-कहीं आदि ऋ टूट गया है और इसका इकार तथा रकार दोनों अलग-अलग हो गये हैं : मृत्यु > मिरतु।

मध्य ऋ > इ—उऋण > उरिन; अमृत > अमरित।

अंत्य ऋ > अ—पितृ > पित्तर; > इ—मातृ > मादरी।

२. स्वर-लोप

अंत्यस्वर-लोप—संध्या > साँझ; शून्य > सुन्; पथ्य > पथ्।

मध्यस्वर-लोप—निराधार > निरधार; पताका; > पतखा, अखाड़ा > अखरा।

आदिस्वर-लोप—नाफः (फारसी) > नफ्फा; नापाक (फारसी) > नपाक; नातेदार > नतेदार; डाल्डा > डल्डा।

३. स्वर-परिवर्त्तन

अंत्यस्वर-परिवर्त्तन—निपुत्र > निपुतरा (अ > आ); परिछाईं > फरछाँहीं (ईं > हीं); हरजाई > हरजाही (ई > ही)।

मध्यस्वर-परिवर्त्तन—पछतावा > पछतुवा (आ > अ); पॉकेट > पाकिट (ए > इ); पुजारी > पुजेरी (आ > ए), शऊर > सहूर (ऊ>हू)

आदिस्वर-परिर्त्तन—आसान > औसान (आ > औ); जौन > जोन (औ > ओ); नियम > नेम (इ > ए); नवाज > नेवाज (अ > ए); नुकसान > नोकसान (उ > ओ)।

४. स्वरागम

आदिस्वरागम—स्तन > अस्तन; कलंक > अकलंक; सवार > असवार; लोप > अलोप; स्कूल > इस्कूल।

मध्यस्वरागम—निस्तब्ध > निसतुबध; अक्ल > अक्किल; पीला > पीअर।

अंत्यस्वरागम—सुई > सुइआ; चिल्लु > चिरुआ; सजा > सजाओ, सजाए।

५. स्वरव्यत्यय

आखीर > आखरी; जानवर > जनावर; विष्णु > बिसुन।

६. अर्द्धस्वर-विकार

अर्द्धस्वर 'य' और 'व' अपनी अर्द्धस्वरता शनैः-शनैः खो रहे हैं और पूर्णस्वर तथा पूर्णव्यंजन की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

'व' के विकार—

(क) आदि 'व' स्वर और व्यंजन दोनों ओर अग्रसर हुआ है : वल्द > ओल्द; वीर > बीर ; विश्वास > बिसबास; वसूल > ओसूल ; वाजिब > ओआजिब।

(ख) पूर्ववर्त्ती व्यंजन के आकारांत, अकारांत और एकारांत होने पर 'व' का 'ओ' हो जाता है : नाव > नाओ; गाँव > गाँओ; घाव > घाओ; लव > लौ; देवर > देओँर; जेवनार > जेँओँनार; देव > देओ।

(ग) पूर्ववर्त्ती व्यंजन के इकारांत और ईकारांत होने पर 'व' का 'उ' हो जाता है :
शिव > सीउ; नींव > नीउ।
अपवाद—लिवाना > लिआना।

(घ) मध्य 'व' का लोप : लवंग > लौंग; अकवन > अकौन।

(ङ) मध्य 'व' का व्यंजन में परिवर्त्तन : जवाहर > जमाहिर।

'य' के विकार—

(क) य > ज—सूर्य > सूरुज; कार्य > काज; यमुना > जमुना; यश > जस।

(ख) मध्यग 'य' का लोप : नीयत > नेत; नियम > नेम।

(ग) मध्यग 'य' का संयुक्त स्वर में परिवर्त्तन : किफायत > किफाएत।

(घ) मध्यग 'य' का स्वर में परिवर्त्तन : अजवायन > अजवाइन।

(ङ) अंत्य 'य' का लोप : ईर्ष्या > इरखा।

(च) अंत्य 'य' का परिवर्त्तन : द्वितीया > दुतिआ; तृतीया > तिरतीआ; पराया > परैआ; नया > नैआ; हृदय > हिरदैआ; समय > समइआ।

व्यंजन-विकार

७. महाप्राणीकरण

ताक > ताखा; अदरक > अदरख; पसीजना > पसीझना; डकार > ढेकार।

८. व्यंजन-लोप

आदिव्यंजन-लोप--निगलना > गिलना।
मध्यव्यंजन-लोप—अँगूठा > अँउठा ; अंगुलि > अँउरी ; निश्चिंत > निचिन्त।
अंत्यव्यंजन-लोप—बरखास्त > बरखास ; दरखास्त > दरखास ; दोस्त> दोस।

९. व्यंजनागम

आदिव्यंजनागम—घृणित > निरघिन।
मध्यव्यंजनागम—समुद्र > समुन्दर/न्; अमरूद > अमधुर/ध; मसूढ़ > मसकुर/क; शाप > सराप/र; कोशिश > कोरसिस/र।
अंत्यव्यंजनागम—पैंसिल > पिलसिट; वैसा > ओइसन; जगत् > जगत्तर; तम्बाकू > तमाकुल।

१०. व्यंजन-परिवर्त्तन

आदिव्यंजन-परिवर्त्तन—डकार > ढेकार।
मध्यव्यंजन-परिवर्त्तन—बनिस्बत > बनिसपत।
अंत्यव्यंजन-परिवर्त्तन—रेजगी > रेजकी / ग > क; राक्षस > राछत / स > त; बरन > बरम / न > म।

११. द्वित्वीकरण

मध्य व्यंजनों का द्वित्व होना—कठिन > कठ्ठिन; अजब > अज्जब; अटल > अट्टल; अलग > अल्लग।

अंत्यव्यंजनों का द्वित्व होना—समूचा > समुच्चा; घटी > घट्टी; कमी > कम्मी।

१२. व्यंजन-व्यत्यय

बीमार > बेराम।

१३. महाप्राण व्यंजनों के साथ बज्जिका में दोनों स्थितियाँ हैं। महाप्राण व्यंजन टूट भी रहे हैं और बन भी रहे हैं। टूटने के क्रम में पुनः दो स्थितियाँ हैं। पहली स्थिति में उनका वर्गीय अंश लुप्त होकर केवल हकार शेष रह गया है। यथा : जाङ्घ > जाङ्ह; लाङ्घना > लाङ्हना। दूसरी स्थिति में वर्गीय अंश तथा हकार अपने पूर्णत्व में पृथक्-पृथक् हो जाता है। जैसे : पघा > पगहा; गधा > गदहा; कंघी > कङ्ही; बीघा > बिगहा। फिर, बज्जिका में महाप्राण व्यंजन बन भी रहे हैं। 'ह' किसी वर्ण के उस वर्ण से सम्बद्ध वर्ग का महाप्राण व्यंजन बन जाता है। उदाहरणार्थ, 'शुबहा' में 'ह' 'ब' के साथ मिलकर पवर्ग का महाप्राण व्यंजन 'भ' हो गया है : सूभा।

यही नहीं, महाप्राण व्यंजन अल्पप्राण में भी रूपांतरित होता है : अर्घ्य > अरक।

१४, बज्जिका में 'ल' का विकार निम्नांकित रूप में हुआ है—

(क) ल और र का विनिमय : ल > र—केला > केरा; अंगुलि > अँउरी; र > ल—पत्थर > पत्थल।

(ख) ल > अ > खिलाना > खिआना; पिलाना > पिआना।

(ग) ल > ढ़—डाल > डाढ़।

१५. म का स्वर में परिवर्त्तन—दमन > दउनी, ग्राम > गाँओ, नाम > नाँओ।

१६. क्ष के विकार—

क—राकस < राक्षस।

छ—लछुमन < लक्ष्मण; लछमी < लक्ष्मी।

च्छ—परिच्छा < परीक्षा; अच्छत < अक्षत।

१७. अकारण अनुनासिकता

अचार>अँचार; अटकना>अँटकना; डाक्टर>डाँकदर; डाकू>डाँकू।

१८. क्षतिपूरक अनुनासिकता

अरथी > रंथी; तिक्त > तींत; पथ्य > पंथ।

१९. निरनुनासिकता

मंजर > मोजर; ठंढा > ठाढ़।

२०. अगर अन्य वर्णों के साथ अनुनासिक वर्ण संयुक्त है, तो वही पूर्ण रूप में शेष रह गया है और अन्य व्यंजन लुप्त हो गये हैं : गेंदा > गेना; बंद > बन्न; चंद्रमा > चनरमा; सुंदर > सुन्नर।

२१. अंत्य संयुक्त व्यंजनों का पूर्ण व्यंजन लुप्त हो जाता है और उसके स्थान पर पूर्ववर्त्ती अर्द्ध व्यंजन का पूर्ण रूप स्थान प्राप्त कर लेता है : जबर्दस्त > जबरदस्स; दस्त > दस्स; दोस्त > दोस।

२२. र-युक्त व्यंजन टूटकर पृथक्-पृथक् हो जाते हैं : प्राण > परान; प्राणी > परानी; स्वर्ग > सोअरग; अर्क > अरक।

२३. कतिपय वर्गों के वर्ण प्रायः स्ववर्गीय किसी वर्ण में रूपांतरित हो जाते हैं।

प्रथम > चतुर्थ :

त > ध—धातु > धाध।

प्रथम > तृतीय :

क > ग—कोबी > गोबी; भक्त > भगत।

ब > म—जबानी > जमानी; लम्बा > लम्मा; विलम्ब > बिलम्म।

प्रथम > द्वितीय :

क > ख—ताक > तुखा; किस्सा > खीसा।

ग > घ—रगड़ना > घररना; गुच्छा > घँउछा; गृहस्थ > घिरुस।

ट > ठ—भ्रष्ट > भठ।

त > द—औकात > औकाद।

द > ध—सूद > सूध।

प > फ—परछाईं > फरछाँहीं।

तृतीय > प्रथम :

ब > प—खूबसूरत > खापसूरत।

२४. इसके विपरीत एक वर्ग के वर्ण का दूसरे वर्ग के वर्ण में भी परिवर्त्तन होता है :

ट > द—डॉक्टर > डाँकदर।

ड > र—टिड्डी > टीरी।

द > र—घौद > घउर।

द > स—ज्यादती > जास्ती।

न > म—लालटेन > लालटेम।

न > ल—नारायण > लराएन; नीलगाय > लिलगाए।

प > अ—दीप > दीआ।

थ > ठ—चौथ > चउठ।

स > छ—सूक्ष्म > छुछुम।

२५. सघोष ऊष्म व्यंजन (ह) और अघोष ऊष्म व्यंजन (स) में विनिमय होता है :

ह > स—मेहतर > मेस्तर।

स > ह—मास्टर > माहटर।

२६. संयुक्त व्यंजनों के सरलीकरण की प्रवृत्ति बज्जिका में अत्यंत प्रबल है :

गर्म > गरम; जिक्र > जीकिर; हर्ष > हरख; सूर्ख > सूरुख।

अर्थविकार

अर्थसंकोच :

नट्टा—दूध देनेवाली मादा पशु के गर्भवती न होने को 'नट्टा' कहते हैं। यह संस्कृत के 'नष्ट' शब्द से बना है, जो किसी भी प्रकार की वस्तु की रिक्तता का बोधक है। भठना—यह संस्कृत के 'भ्रष्ट' शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है सामान्य स्तर से गिरा हुआ होना। किंतु, 'भठना' का प्रयोग बज्जिका में अस्पृश्य जातियों के यहाँ भोजन कर लेने या उनके साथ वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित कर लेने के कारण जाति-बहिष्कृत हो जाने के अर्थ में होता है। खील—किसी वृक्ष के छोटे-छोटे फलों को खील कहते हैं। यह संस्कृत के 'खिल' शब्द का ही रूपांतर है, जिसका अर्थ होता है 'परिशिष्ट'। बज्जिका में 'खील' सभी वस्तुओं के परिशिष्ट का बोध न कराकर केवल फलों के परिशिष्ट का बोधक है।

अर्थविस्तार :

रङ—बज्जिका में इसका अर्थ होता है 'तरह'। अर्थात्, यह रंग-साम्य से बढ़कर सभी प्रकार के साम्य का वाचक हो गया है। गुदा—बज्जिका में यह 'सामर्थ्य' के लिए प्रयुक्त होता है। यह शब्द 'गूदा' से बना है, जो बीज के बीचवाले अंश का बोध कराता है। देआद—यह संस्कृत 'दायाद' शब्द से बना है; परन्तु बज्जिका में इसका अर्थ विस्तृत होकर उन व्यक्तियों का भी बोध कराता है, जो वंश-परम्परा में दूर हो जाने के कारण सम्पत्ति के अधिकारी नहीं भी होते। संस्कृत में दायाद उसी व्यक्ति को कहा जाता है, जो दायभाग के नियमों के अनुसार किसी की सम्पत्ति में हिस्सा पाने का अधिकारी है।

अर्थादेश :

कनिआ—बज्जिका में 'कनिआ' शब्द 'पत्नी' का बोध कराता है, जबकि यह शब्द संस्कृत के 'कन्या' शब्द से बना है, जिसका अर्थ होता है 'पुत्री'। सरधा—इसका अर्थ होता है शौक। यह संस्कृत 'श्रद्धा' से बना है, जो 'आदर' के अर्थ में प्रयुक्त होता है। गल्ली—इसका अर्थ होता है घर के साथ स्त्रियों के लिए बना हुआ शौचालय। पर, यह 'गली' शब्द से बना है, जो संकीर्ण सड़क का बोधक है।

लिपि

यह पहले कहा जा चुका है कि बज्जिका की लिपि कैथी है। बल्कि, यही कहना अधिक उपयुक्त होगा कि बज्जिका-क्षेत्र की लिपि कैथी है; क्योंकि जब व्रजी साहित्यिक भाषा थी, तब बज्जिकाभाषियों ने व्रजी को कैथी में लिखा और आज खड़ी बोली साहित्यिक भाषा है, तो बज्जिकाभाषी घरेलू पत्रों की भाषा खड़ी बोली भी रखते हैं और उसकी लिपि प्रायः कैथी ही रहती है। अभी हाल तक बज्जिका-क्षेत्र की कचहरियों में रोमन-लिपि के साथ कैथी ही चलती थी और अब भी कुछ-कुछ चल रही है, यद्यपि देवनागरी-लिपि धीरे-धीरे इसको विस्थापित करती जा रही है।

साहित्य

बज्जिका में लिखित साहित्य का अत्याधुनिक युग तक अभाव रहा है। इसका कारण यही है कि बज्जिकाभाषी सदैव राष्ट्र के हित के लिए स्वार्थों का त्याग करते आये हैं। हिंदी साहित्य में सदैव पछाँह की भाषा प्रधान रही है। अतएव, बज्जिकाभाषियों ने उसीमें रचनाएँ कर उसकी श्रीवृद्धि की है। जब व्रजी हमारे साहित्य-क्षेत्र में मान्य थी, तब बज्जिका-भाषियों ने व्रजी में ही रचनाएँ कीं और आज जब वह स्थान खड़ी बोली को प्राप्त है, तब बज्जिकाभाषी अपनी मातृभाषा की चिंता छोड़ उसी को समृद्ध करने में लगे हुए हैं।

फिर भी, बज्जिकाभाषी यदा-कदा बज्जिका में अपनी भावनाओं, अपने विचारों की अभिव्यक्ति करते रहे हैं और यह क्रम प्रायः अटूट है, यद्यपि बज्जिका-साहित्य पर सम्यक् शोध के अभाव में यह सारा साहित्य हमें ज्ञात और उपलब्ध नहीं है।

बज्जिका के कुछ प्रमुख प्राचीन एवं आधुनिक साहित्यकार ये हैं—

१. **गयाधर**[१]—ये वैशाली के निवासी थे। इनके गुरु का नाम अवधूतिपा और पुत्र का नाम तिव्रूपा था। ये बौद्धधर्म एवं साहित्य के प्रचारार्थ सन् १०४५ ई० में तिब्बत गये थे। इनके विषय में कहा गया है कि इन्होंने पुरानी हिंदी या अपभ्रंश में रचनाएँ की हैं। इनकी रचनाओं का उदाहरण अलब्ध है, किंतु ऐसा अनुमान किया जाता है कि इनकी भाषा में पुरानी बज्जिका के उदाहरण प्राप्त होंगे; क्योंकि अपभ्रंश के रचनाकारों ने अपनी भाषा में स्थानीय बोली को बहुत दूर तक स्थान दिया है।

२. **हलधरदास**—इन्होंने सन् १५६५ ई० में 'सुदामाचरित' नामक एक उत्कृष्ट खंडकाव्य व्रजी में लिखा था।[२] कहा जाता है कि इन्होंने भी बज्जिका में रचनाएँ की थीं।

३. **मँगनीराम**—बिहार के अनेक विस्मृत ग्रंथों एवं ग्रंथकारों को प्रकाश में लाने के श्रेयस्वी श्रीउमाशंकरजी मँगनीराम का जीवन-काल सन् १८१५ से १९१८ ई० तक मानते हैं। मँगनीराम का जन्म मुजफ्फरपुर जिलांतर्गत सतपुरा ग्राम में हुआ था। ये मलूक-मत के अनुयायी थे, ऐसा इन्होंने स्वयं स्वीकार किया है—

संत जानिये ताहि जो, अंत बतावै राम।
मँगनीराम मलूक मत, नाम अनंत प्रनाम॥

अधिकांश संत-कवियों के विपरीत मँगनीराम सुशिक्षित और शास्त्रज्ञान-सम्पन्न थे। इनकी तीन पुस्तकें उपलब्ध हैं—मँगनीराम की साखी, रामसागरपोथी और अनमोलरत्न। बज्जिका में लिखे गये इनके भजन आदि जनता में प्रचलित हैं, जिनका संकलन-सम्पादन आवश्यक है।

४. **रामसंजीवन सिंह**—सम्प्रति ये शिक्षक-प्रशिक्षण-महाविद्यालय, तुर्की (मुजफ्फरपुर) के प्राचार्य हैं। खड़ी बोली में इनकी कई कविता-पुस्तकें प्रकाशित हैं, जो

१. हिंदी-साहित्य और बिहार : आचार्य शिवपूजन सहाय, प्र० सं०, पृ० २६।

२. पटना-विश्वविद्यालय द्वारा पी-एच० डी० के लिए स्वीकृत शोध-प्रबंध, 'हिंदी के मध्यकालीन खंडकाव्य'।

विविधपक्षीय महत्त्व से युक्त हैं। वज्जिका भाषा में 'बुद्ध वैशालिक' नामक काव्य लिख रहे हैं, जिसकी कुछ पंक्तियाँ द्रष्टव्य हैं —

मगर काल के चाल अबस्था पलटा खाइत हए गरमुरिया
सबके साँचो परी बुझाइत हइ माटी काठी के गुरिया
हार चाम के नक्कासी पर चकाचौंध में आँख परल हइ
काम बासना के लासा में बनपंछी के पाँख गरल हइ
बेद सास्त्र के आर लगा के हिंसा हइ सिंगार सजबइत
गाल बजबइत अभिमंत्रित कर बलि पशु ला तलवार पिजबइत
कोसल से पंजाब भिर रहल बज्जी देख मगध गलइत हइ
कसमीरी केसर के खेती उज्जयिनी हाथी दलइत हइ
आँख लाल हइ भौंह तरेरल मन के कायरता छलइत हइ
बाहर खंजर मजल जा रहल भीतर बिसकन्या पलइत हइ

तत्सम-प्रधान वज्जिका का यह सुंदर उदाहरण है।

५. अजितनारायण सिंह 'तोमर'—ये बज्जिका के गद्य और पद्य, दोनों को समृद्ध कर रहे हैं। इनके द्वारा लिखित 'परतछ के परमान की' बज्जिका भाषा में प्रकाशित प्रथम कहानी-संग्रह है। इसकी भाषा साफ, मुहावरेदार और लोकोक्तिमयी है। एक उदाहरण :

"रात में मिसिर के मेहरारू कहलकई जे छँउरी जने जाइअ तनही सट जाइअ। हमरा असकरुआ के काम न सपरइअ। मिसिर सुलगल इनोरा नाहित मुँह बा क कहलकई जे हम ओकरा कथिला रोकबई? ऊ त हमरा खाएक ल क जाइअ। हम झट दनि खा लेइत ही आ गते लउट जाइअ, जेना बिढ़नी लागल रहईक। लरिके त ठहरल। पैंरा में खेले में बिथ रहइत होएत। खेलबारी त हइते हए। काम न धंधा अढ़ाई रोटी बंधा। करनी न धरनी धिआ ओठ बिदोरनी बला हाल हई।"

तोमरजी ने वज्जिका में सुंदर गीत भी रचे हैं—

आऊ, आऊजी, कइसे बइठाऊ, कइसे उठाऊ, धन भाग।
सबरी के झोपरी में रउरा के सोआगत, धरती के भागो ई जाग॥
सोआगत रउरा के हमरा नएन में, सोआगत हए चारु ओर।
सोआगत रउरा के बिदेआ भवन में, सोआगत करइ साँझ भोर॥
चिरँइ चुरमुनि सेहो करे सोआगत, सोआगत में करइ सोर।
हओले, हओले बतासो बहइअ, बेनिआ डोलाबइ मोर॥
रउरा के पून परतापो फरइअ, गदरल आम टिकोल।
जेने जेने जाइ रउरा झुक झुक परइअ, साँय साँय बोलइ जे बोल॥

पहेली, मुकरी (छकौअल) आदि अनेक क्षेत्रों में भी तोमरजी ने प्रयोग किये हैं और बज्जिका के लोकगीत, लोककथा इत्यादि का उत्कृष्ट संकलन किया है।

६. विंध्यवासिनी देवी—श्रीमती विंध्यवासिनी देवी आकाशवाणी, पटना में लोकसंगीत-निर्देशिका हैं। ये बिहार के लोकगीतों का विश्वकोश ही हैं। लोकगीतों की आत्मा की अद्भुत परख इन्हें प्राप्त है। रामनरेश त्रिपाठी, देवेंद्र सत्यार्थी आदि साहित्यकारों ने लोकगीतों को साहित्यिक प्रतिष्ठा दी, किंतु विंध्यवासिनी देवी ने उन्हें संगीत की मर्यादा प्रदान की। इन्होंने वर्षों के अध्यवसाय से बिहार के लोकजीवन के सभी स्तरों एवं सभी क्षेत्रों के सैकड़ों लोकगीतों का संकलन किया है और उन्हें शास्त्रीय रागों में बाँध दिया है। 'लोकसंगीत-सागर' नाम से बारह भागों में लिखित पांडुलिपि प्रकाशनार्थ तैयार है।

बज्जिका में इन्होंने कृष्णलीला-विषयक भजन तो लिखे ही हैं, इसमें 'वैशाली-महिमा' नाम से एक सुंदर कथा-काव्य भी लिखा है, जो अप्रकाशित है। इसकी कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं—

समइआ के राही हती जुगता के नपइत हती
पलक चदरिआ बिछाए।
बरीस पचीस सौ पाछे मोरा सङ चल्
तोहरा के लाऊ बइसाली देखाए॥
गंगा गंडक हिमांचल से मिलन मनोहर प्रांत।
रहइत रहे छत्री एक जाती जे लिच्छवि कहात॥

७. उमाकान्त वर्मा—ये राजनारायण कॉलेज, हाजीपुर में हिंदी-विभाग के अध्यक्ष हैं। जन्मना भोजपुरीभाषी होने पर भी ये बज्जिका को समृद्ध कर रहे हैं। ये बज्जिका भाषा पर भाषावैज्ञानिक दृष्टि से शोधकार्य कर रहे हैं। साथ ही, बज्जिका में इन्होंने कविताएँ लिखी हैं और लोककथाओं का संकलन किया है।

८. नगेंद्रनाथ—ये खड़ी बोली और बज्जिका में कविताएँ करते हैं। इनकी कविताएँ साफ़ और ओजस्विनी होती हैं।

९. सत्यदेवनारायण अष्टाना—ये बज्जिका और खड़ी बोली के एक सुकवि हैं।

१०. श्रीरंग शाही—बज्जिका-आंदोलन को इन्होंने बल दिया है। बज्जिका-लोक-साहित्य की विवेचना और आलोचना में भी ये तत्पर हैं। ये 'बज्जिका' मासिक के संपादक हैं।

११. अवधनंदन शरण—ये बज्जिका में कविताएँ और आलोचना लिखते हैं।

१२. बिगनप्रसाद सिंह—ये निबंध लिखते हैं और लोककथाओं के संकलन में भी योग दे रहे हैं।

१३. लक्ष्मेश्वरप्रसाद सिनहा—ये कहानियाँ लिखते हैं।

१४. विपिनविहारी नंदन—इन्होंने सुंदर संस्मरण लिखे हैं।

इधर मुजफ्फरपुर से श्री श्रीरंगशाही के सम्पादकत्व में 'बज्जिका' मासिक का प्रकाशन आरम्भ हुआ है, जिसके दो अंक सामने आये हैं। इस पत्रिका ने एक ओर श्रीरामरीझन रसूलपुरी-जैसे पत्रकार, श्रीहरीश जायसवाल-सदृश कहानीकार तथा प्रो० कृष्णनंदन 'पीयूष'-जैसे प्रसिद्ध कवि को बज्जिका में लिखने के लिए आकृष्ट किया है,

तो दूसरी ओर प्रो० श्रीमती कुमुद, श्रीकृष्णचंद्र 'वत्स', श्रीकृष्णजीवन भट्ट, प्रो० अवधेश्वर 'अरुण', श्रीभूपेंद्रकुमार 'अबोध' आदि कवियों-कवयित्रियों एवं प्रो० विनोदिनी, श्रीसुरेशचंद्र सुमन, श्रीवीरेंद्रकुमार बेनीपुरी, श्रीमती चंद्रकला शाही आदि लेखक-लेखिकाओं को भी प्रेरित किया है।

यहाँ यह उल्लेख्य है कि श्रीरामरीझन रसूलपुरी ने उत्तर बिहार और श्रीदिनेश प्रसाद सिंह ने स्वतंत्रता के द्वारा बज्जिका को यथोचित प्रोत्साहन दिया है।

इनके अतिरिक्त अनेक बज्जिकाभाषी खड़ी बोली के साहित्यकार बज्जिका की साहित्य-रचना में संलग्न हैं।

उपसंहार

राहुलजी इस बज्जिका-यज्ञ के मंत्रदाता हैं, किंतु पुरोहित तो श्रीरामवृक्ष बेनीपुरी और श्रीगदाधरप्रसाद अम्बष्ठ ही हैं। राहुलजी का प्रयास कागज के पृष्ठों में ही रह जाता, यदि बेनीपुरीजी जैसे ख्यातनामा साहित्यकार और अम्बष्ठजी जैसे लोकभाषा-पारखी ने इस क्षेत्र में पदार्पण न किया होता। अम्बष्ठजी ने बज्जिका और अंगिकाभाषियों को मातृभाषा के प्रति जागरूक किया और यह बेनीपुरीजी का ही प्रयास है कि आज यहाँ इस निबंध का पाठ हो रहा है। डॉ० योगेन्द्र मिश्र इतिहास के अध्ययन, अध्यापन एवं अन्वेषण में रत रहकर भी इस यज्ञ में आहुति दे रहे हैं। डॉ० मिश्र ने सन् १९३६ ई० में, जब वे मुजफ्फरपुर जिला-स्कूल के ग्यारहवें वर्ग के छात्र थे, 'वैशाली यूथ लीग' की स्थापना कर वैशाली की गौरव-चेतना को प्रथम उत्थान दिया था। वैशाली और बज्जिसंघ की गौरव-चेतना के उदय के बाद ही वहाँ की भाषा बज्जिका के उद्धार की ओर लोगों का ध्यान गया। आज भी डॉ० मिश्र की विद्वत्ता और उनके मातृभाषानुराग से बज्जिका को बल प्राप्त हो रहा है। कालांतर में, जब श्रीजगदीशचन्द्र माथुर आइ० सी० एस्० के प्रयास से वैशाली-संघ की स्थापना हुई, तब वैशाली की गौरव-चेतना को उत्कर्ष तो मिला ही, अप्रत्यक्ष रूप से बज्जिका को भी सहारा मिला। श्रीमाथुर स्वयं एक सुधी साहित्यकार हैं और बज्जिका भाषा उनसे बहुत कुछ आशा रखती है।

यद्यपि आज बज्जिका अनेक सबल व्यक्तित्वों के साहाय्य, मान्य साहित्यकारों के आशीर्वाद और युवक लेखकों के उत्साह से संवलित हो रही है, तथापि इसका अभाव अनंत है। बज्जिका को समृद्ध करने के प्रयत्न की निम्नांकित दिशाएँ हो सकती हैं—

क. बज्जिका की ध्वनियों का विश्लेषण; ख. बज्जिका भाषा का इतिहास; ग. बज्जिका भाषा का व्याकरण; घ. बज्जिका भाषा का शब्दकोश, ङ. बज्जिका भाषा में साहित्य की विविध विधाओं का सर्जन; च. बज्जिका की लोककथाओं, लोकगीतों, मुहावरों, लोकोक्तियों, पहेलियों तथा मुकरियों (छकौअल) का संकलन और विवेचन; छ. बज्जिका की पत्र-पत्रिकाओं का प्रकाशन और ज. बज्जिका भाषा के एक सम्मेलन की स्थापना।

●●

परिशिष्ट

लोकगीत

[१]

राजा जनकजी के धन फुलबरिआ लगले बहेलिआ के गाछ हे।
ताहीं पर सीता हिलल हिरोलबा रामजी खेलले झिकिझोर हे।
खेलीए खुलीए गे सीता घर चलि अइलीं अम्मा पुछुले साँच बात हे।
कहमा गमउली सिता आधी आधी रतिआ कहमा गमउली भिनसार हे।
लाज के बात अम्मा कहलो न जाए पीछे कहब समुझाए हे।
राजा दसरथजी के रामजी बेटा हमरा से खेलले झिकिझोर हे।
आज अबधपुर सोने के सिंघरबा धरबो धाई कर मँगाउ हे।
भेल बिआह परल सिर सेनुर सीता चलले ससुरार हे।
सब देओतन मिली आसिस देलन सीता चलले ससुरार हे।
रामजी के जांघी चढ़ी सीता हे बइठली भोगिअहु अजोधा के राज हे।

खड़ी बोली-रूपांतर

धन्य है राजा जनक की फुलवारी, जिसमें 'बहेलिआ' (?) के वृक्ष लगे हुए हैं। उसके नीचे सीता झूला झूलती हैं और राम 'झिकिझोर' (?) खेलते हैं। खेल-कूदकर सीता जब घर आईं, तब माता ने सची बात पूछी—'हे सीता! आधी-आधी रात तुम कहाँ बिताती हो और भोर कहाँ बिताती हो?' (सीता बोलीं—) 'हे माता! यह लाज की बात कही नहीं जाती, पीछे समझाकर कहूँगी। राजा दशरथ का पुत्र राम मुझसे 'झिकिझोर' खेलता है। (सीता की मा ने कहा—) 'आज अवधपुर के सिंहासन को पकड़वा मँगाऊँगी।' विवाह हुआ, माँग में सिंदूर पड़ा और सीता ससुराल चलीं। सभी देवताओं ने सीता को आशीर्वाद दिया। राम की जाँघ पर सीता बैठीं। हे सीता! आप अयोध्या का राज भोगें।

[२]

कहमा से साजी चललन राजा दसरथ कओने नगरिआ कए ले जाऊ हे।
कहमा के सखी सब परिछन चलली गबइत मंगलचार हे।
अजोधा से साजि चलले राजा दसरथ जनकपुर नगरिआ कएले जाऊ हे।
गोखुला के सखी सब परिछन चललीन गबइत मंगलचार हे।
जबे बरिअतिआ जनकपुर पहुँचल सीआ झरोखाहीं ठाढ़ हे।
देबऊ गे चेरिआ सोने के गेरुअबा हमें आगे सिया बखान हे।
सीता हो सीता जन बोलु सिरी रामचन्द्र सीता अधिक सुकुमार हे।
सीता के केसीए चओर डोलतु हैं भौंरा गुजारे दुनों आँख हे।
सीता के जोते चनरमा छपीत भेल हरखित भेल सनसार हे।
सब बरिअतिआ के लाली लाली धोतिआ सबके रङल मुख दाँत हे।
सबके नएन भरि काजर सोभे कइसे चिन्हब सिरी राम हे।
रामजी के माथे कोढ़िल के मउरिआ उहे से चिन्हब सिरी राम हे।

खड़ी बोली-रूपांतर

राजा दशरथ कहाँ से सजकर चले हैं और किस नगर में जा रहे हैं? कहाँ की सखियाँ मंगलगान करती हुई अगवानी करने चलीं? अयोध्या से राजा चले हैं और जनकपुर नगर जा रहे हैं। गोकुल की सखियाँ मंगलगान करती हुई अगवानी करने चली हैं। जब बराती जनकपुर पहुँचे, तब सीता झरोखे पर खड़ी थीं। ऐ दासी! मैं तुम्हें सोने का गेड़ुआ दूँगा, मेरे सामने सीता का वर्णन करो। हे रामचन्द्र! आप सीता-सीता अधिक न बोलिए, सीता अत्यधिक सुकुमार हैं। सीता के केश चँवर के समान झूल रहे हैं और दोनों आँखें भौंरे के सदृश हैं। सीता की छवि से चंद्रमा मलिन है और संसार हर्षित। सभी बरातियों की लाल-लाल धोतियाँ हैं और सबके मुख तथा दाँत रँगे हुए हैं। सबकी आँखों में काजल शोभा देता है, श्रीराम को कैसे पहचानूँगा। रामजी के माथे पर 'कोढ़िल' का मौर है, उसी से उन्हें पहचानूँगा।

लोककथा

एगो रजा रहे। ओकरा एगो बेटी भेल। बेटी जब बारह दिन के भेल त ओकरा बारह बरिस के एगो लरिका से बिआह क देलक। बर जब ई बात जनलक त पहिले बरा घबराएल बाकि फेनू ओकरा अपना घरे ले आएल। कुछ दिन त ओकरा साथे रखलक बाकि बाद में गाँओ के एगो औरत से फँस गेल आ ओकरा ले क भाग गेल।

जोन लरकी के छोर क ऊ चल गेल रहे, ऊ रोज बहरना के एगो बर के पेंर तर फेंकइत रहे। जब ऊ कुछ लमहर भेल त बर तर जा क कहल करे—"बर लागल बरहोर तिरिआ भेल भगजोगनी, हे बर तूँ काँहाँ हत।" एगो काग रोज दिन सुनइत रहे। एक दिन ऊ लरकी के टोकलक आ पुछलक कि की बात हए। लरकी सब बात काग के बता देलक। काग एगो उपाए बतलकइ—"एगो भँइसा ला, एगो सीसी में झिङुर भर ले आ एगो सुन्नर चुनरी ले आ।" लरकी सब चीज लएलक। काग भँइसा पर बइठ लेलक आ लरकी रस्सी ध क भँइसा के ले चलल।

जब सब हुँआँ पहुँचलन जहाँ ओकर दुलहा रहइत रहे त काग कहलक कि हिंअई डेरा द। हुँअई डेरा परल। बिहने भेला काग लरकी के कहलक कि तूँ अप्पन चुनरी पेन्ह ले। लरकी पेन्ह लेलक। सुन्नर चुनरी पेन्हे से ऊहो बरा सुन्नर लागे लागल। नजदीके ओकर दुलहा के डेरा रहई जहाँ ऊ औरत के जौरे रहइत रहे। औरत ऊ लरकी के चुनरी पेन्हले देखलक। ऊ लोभा गेल। ऊ अपना मरद से कहलक कि एक्को दिन ला चुनरी माङ के हमरा ला द। ओकरा हार क चुनरी माङे ला जाए के परल। ई देख क काग लरकी के सिखएलक—चुनरी दे दे बाकि ई सरत पर कि अगर चुनरी में तनिको दाग लागल त हम्मर बात माने के परतओ। ऊ मरद अपना औरत से पूछे गेल। औरत कहलकई कि चाहे जोन सरत पर होए चुनरी लाब। ऊ चुनरी ले अएलक। औरत चुनरी पेन्हलक आ रात भर अपना मरद के साथें मौज कएलक। काग लरकी के फेन सिखएलक कि झिङुर सके छोर दे। झिङुर स रात भर में सारी के चाट गेल।

बिहने भेल जब ऊ मरद जागल त त चुनरी के दसा देख क हतास हो गेल। ऊ सोचे लागल कि न मालूम लरकी कौन काम कराएत। लरकी फाटल चुनरी देख क कहलक कि अप्पन कउल पूरा कर आ भँइसा के रस्सी ध क ले चल। मरद के ओ इसन करे के पड़ल। चलइत चलइत ऊ लोग के भूख लागल। लड़की खिचड़ी बनएलक। एक सेर चाउर दाल में सबा सेर नून मिला देलक। ऊ मरद जइसही कौर देलक कि ओकरा उगिले के पड़ल। तब लरकी अप्पन परचे देलक। मरद अप्पन गलती समझलक आ ऊ लरकी के साथे रक्खे लागल।

खड़ी बोली-रूपांतर

एक राजा था। उसके एक बेटी हुई। बेटी जब बारह दिनों की हुई, तब उसका विवाह बारह वर्ष के एक लड़के से कर दिया। लड़के ने जब यह बात जानी, तब वह घबराया, किंतु फिर अपने घर ले आया। कुछ दिन तो उसे अपने साथ रखा, लेकिन बाद में वह गाँव की एक स्त्री से प्रेम करने लगा और उस स्त्री को लेकर भाग गया।

जिस लड़की को छोड़कर वह चला गया था, वह रोज बुहारन को एक बरगद के पेड़ के नीचे डाला करती थी। जब वह कुछ बड़ी हुई, तब बरगद के नीचे जाकर कहा करती थी—"बर लागल बरहोर तिरिया भेल भगजोगनी, हे बर तूँ कहाँ हत।" एक काग रोज दिन सुना करता था। एक दिन उसने लड़की से पूछा कि क्या बात है। लड़की ने सारी बातें काग को बता दीं। काग ने उसे एक उपाय बताया—एक भैंसा लाओ, एक शीशी में झींगुर भर लो और एक सुंदर चुनरी ले आओ। लड़की सारी चीजें ले आई। काग भैंसे पर बैठ रहा और लड़की रस्सी पकड़कर भैंसे को ले चली।

जब सब वहाँ पहुँचे, जहाँ उस लड़की का पति रहता था, तब काग ने कहा कि यहीं डेरा डालो। वहीं डेरा डाला गया। सुबह में काग ने लड़की से कहा कि तुम अपनी चुनरी पहन लो। लड़की ने चुनरी पहन ली। सुंदर चुनरी पहनने से वह भी बहुत सुंदर मालूम पड़ने लगी। निकट ही उसके पति का डेरा था, जहाँ वह औरत के साथ रहता था औरत ने उस लड़की को चुनरी पहने देखा। वह मोहित हो गई। उसने अपने पति से कहा कि एक दिन के लिए मेरे लिए चुनरी माँगकर ला दो। उसको विवश होकर चुनरी माँगने के लिए जाना पड़ा। यह देखकर काग ने लड़की को सिखाया—तुम चुनरी दे दो, किंतु इस शर्त्त पर कि इसपर तनिक भी दाग लगा, तो मेरी बात माननी पड़ेगी। वह मर्द अपनी पत्नी से पूछने गया। उसकी पत्नी ने कहा जिस शर्त्त पर हो, चुनरी अवश्य लाओ। औरत ने चुनरी पहनी और रात-भर अपने पति के साथ क्रीड़ा की। काग ने लड़की को फिर सिखाया कि झींगुरों को छोड़ दो। झींगुर रात भर में साड़ी को चाट गये। प्रातःकाल जब वह मर्द जगा, तब चुनरी की दशा देखकर हताश हो गया। वह सोचने लगा कि पता नहीं, लड़की कौन काम करायगी। लड़की ने फटी चुनरी देखकर कहा कि अपनी प्रतिज्ञा पूरी करो और भैंसे की रस्सी पकड़कर ले चलो। मर्द को वैसा करना पड़ा। चलते-चलते उनलोगों को भूख लग गई। लड़की ने खिचड़ी

बनाई। एक सेर चावल-दाल में सवा सेर नमक मिला दिया। उस मर्द ने जैसे ही कौर मुँह में रखा कि उसे उगलना पड़ा। तब लड़की ने अपना परिचय दिया। मर्द ने अपनी गलती स्वीकार की और वह उस लड़की को अपने साथ रखने लगा।

लोकोक्ति

१. अपना ला लल जगत्तर ला दानी—स्वयं दरिद्र, किंतु संसार के लिए दानी।

२. माल महराज के मिरजा खेले होरी—धन किसी का और उसे उड़ावे कोई।

३. काने के मन त आँख में गर गेल खूँटी—रोने की इच्छा थी, तो आँख में खूँटी गड़ने का बहाना ?

४. अप्पन मारल सट्टल जाये आनक दुलारल हट्टल जाये—अपने आदमी को मारने पर भी वह निकट ही रहता है, किंतु पराये को दुलारने पर भी वह अलग रहता है।

५. खा-पी पसरी, मार-पीट सँसरी—खा-पी कर लेटना चाहिए और मार-पीट करके खिसक जाना चाहिए।

६. बैल कन्हगर कुटुम मुँहगर—बैल ऊँचे कंधेवाला लेना चाहिए और कुटुम्ब ऐसा करना चाहिए, जिसकी बात का सर्वत्र आदर होता हो।

७. दूध ला जाइ त कटिआ न चोराई—जब किसी के पास माँगने के लिए जायँ, तो माँगने में संकोच नहीं करना चाहिए।

८. हँसुआ के लगन खुरपी के बिआह—अवसर के अनुकूल काम होना चाहिए।

९. हरबरी के बिआह कनपट्टी में सेनुर—शीघ्रता से काम बिगड़ जाता है।

मुहावरा

१. बाट के दूभी न टूटना—किसी स्थान पर फिर न जाना।

२. करिखा लगना—बदनामी होना।

३. पीठ में धूरी लगना—हारना।

४. सतुआ सानना—कई बेमेल वस्तुओं को एक साथ मिला देना।

५. आँख के पानी मर जाना—लज्जाहीन हो जाना।

६. दोसरा के मुथा पर हजामत बनाना—दूसरे के भरोसे कोई काम करना

७. हुर हेड़ा फिरना—व्याकुल होना।

८. पेट के पानी न पचना—संतोष न होना।

९. हाँथ खाली होना—पास में पैसे न होना।

१०. हाँथ तङ होना—आर्थिक कठिनाई में पड़ना।

बज्जिका-भाषाभाषी क्षेत्र